आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 13 अगस्त 2017 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 13 अगस्त 2017 से 19 अगस्त 2017

भाद्र कृ.– 06 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 58, अंक 84, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

जगदीश चन्द्र डी.ए.वी. कॉलेंज, दसूहा में नये प्राचार्य के साथ आरम्भ हुआ नया सत्र

जगदीश चन्द्र डी.ए.वी. कॉलेज, दसूहा के प्रांगण में वर्ष 2017–18 का नया सत्र वैदिक ऋचाओं के गान तथा यज्ञ अनुष्ठान से आरम्भ हुआ। संयोगवश इसी दिन कॉलेज के नये प्रिंसिपल डॉ. अमरदीप गुप्ता ने भी अपना पदभार ग्रहण किया। इस यज्ञ में कॉलेज के टीचिंग व नॉन–टीचिंग स्टाफ के अतिरिक्त नये सत्र में प्रविष्ठ हुए विद्यार्थियों सहित नगर के गण–मान्य व्यक्तियों की विशेष उपस्थिति रही। मुख्य यजमान डॉ. अमरदीप गुप्ता ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डी.ए.वी. आन्दोलन के संस्थापकों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि दी, साथ ही डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति के यशस्वी प्रधान आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी के प्रति विशेष धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि हाल ही में पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत डॉ. पूनम सूरी के नेतृत्व में डॉ. सतीश शर्मा (डायरेक्टर, कॉलेजिज) देशभर में डी.ए.वी. कॉलेजो का सफल संचालन कर रहे हैं।

डॉ. गुप्ता ने जगदीश चन्द्र डी.ए.वी. कॉलेज, दसूहा को अपने त्याग और समर्पण से स्थापित करने वाले स्व. जगदीश चन्द्र शर्मा जी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजति अर्पित की और कहा कि आज यह कॉलेज उन्नति के जिस मुकाम पर पहुँचा है, वह उनका एक स्वप्न था, जो कॉलेज के स्टाफ और पूर्ववतीं प्राचार्यो की कड़ी मेहनत और त्याग से पूर्ण हुआ है।

डॉ. गुप्ता ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज शिक्षा के साथ–साथ चरित्र–निर्माण की अत्यंत आवश्यकता है और हम सब मिलकर इस दिशा में सक्रिय पग उठाएंगे जिससे यहाँ से निकले हुए विद्यार्थी सच्चे आर्य और श्रेष्ठ नागरिक बनें। इस अवसर पर प्रिंसिपल स्वतंत्र कुमार चोपड़ा, श्री रमेश कुमार शर्मा तथा श्री अश्विनी कश्यप विशेष रूप से उपस्थित थे। यज्ञ का समापन शान्ति–पाठ से हुआ।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

'आर्य जगत्' अपने सभी सुधी पाठकों को स्वतंत्रता दिवस के इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता है। हमारा देश स्वतंत्रता के एक नए वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। स्वतंत्रता दिवस के इस उल्लास में हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए स्वराज्य और स्वाधीनता के रूप को ध्यान में रखना आवश्यक है। आइए महर्षि दयानन्द के दिखाए हुए वेदों के मार्ग पर चलते हुए स्वतंत्रता का उपभोग करते हुए नित नवीन ऊँचाइयों को छूने का प्रयास करें। – सम्पादक

डी.ए.वी. दुर्गापुर के मेधावी छात्रों का सम्मान समारोह 'आरोहण' सम्पन्न

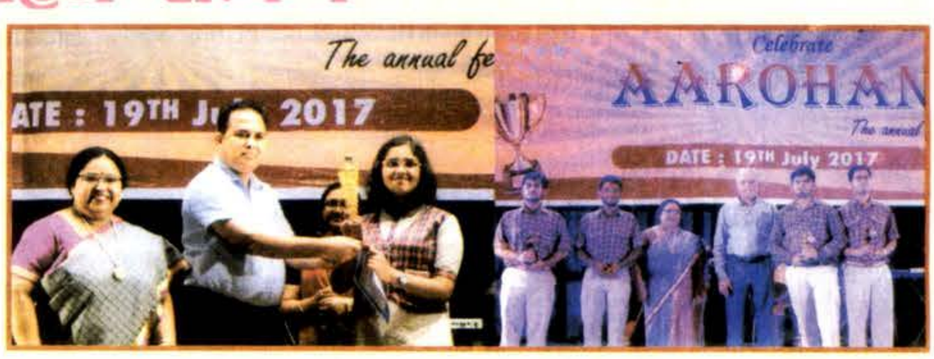

दुर्गापुर सिटी–सेंटर स्थित सृजनी प्रेक्षागृह में डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर के कीर्तिवान छात्रों के लिए पुरस्कार वितरण समारोह 'आरोहण' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ दीप–प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया था। इस कार्यक्रम में सी.बी.एस.ई. द्वारा आयोजित 12वीं कक्षा की परीक्षा में भाग लेने वाले कुल 464 विद्यार्थियों में से 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 157 विद्यार्थियों सहित दसवीं कक्षा के 325 विद्यार्थियों में से सी.जी.पी. ए–10 प्राप्त 113 विद्यार्थियों को पुरस्कार के तौर पर मोमेंटो एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। कक्षा बारहवीं के विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के माता–पिता को सम्माननीय अतिथियों द्वारा पुष्प गुच्छ एवं शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।

विद्यालय की प्राचार्या एवं डी.ए.वी. पश्चिम बंगाल ज़ोन की सह–निदेशिका पापिया मुखर्जी ने इन परीक्षाओं के परिणामों तथा विद्यालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए इस सफलता के लिए विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा शिक्षकों को बधाई दी। ए.आई.ई.ई.ई., एन.ई.ई.टी., के.वाई.वी.पी., आदि परीक्षाओं में विद्यालय को अग्रिम पंक्ति में खड़ा करने के लिए सफल विद्यार्थियों को शुभकामना प्रदान कीं।

विज्ञान संकाय की अव्वल छात्रा आइरिन घोष की उपलब्धि को विशेष तौर पर प्रकाशित किया गया, जो न केवल ए.आई.एस.ई. की परीक्षा में विद्यालय में प्रथम रही बल्कि बंगाल ज्वाइंट में द्वितीय स्थान तथा ए.आई.ई.ई.ई. में 43वाँ स्थान (लड़कियों में प्रथम स्थान) प्राप्त करने के उपरांत थाईलैंड में केमिस्ट्री ओलम्पियाड में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए द्वितीय स्थान ग्रहण कर विदेश की भूमि पर भारत का मान बढ़ाया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रोफ़ेसर (डॉ.) साधन चक्रवर्ती, उप–कुलपति काज़ी नज़रूल विश्वविद्यालय, आसनसोल ने कहा कि यह गर्व का विषय है कि डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर के छात्र इतनी सफलता हासिल कर रहें हैं। आइ.पी.एस. अभिषेक मोदी, पुलिस उप–आयुक्त (पूर्वी क्षेत्र–1), आसनसोल–दुर्गापुर पुलिस कमिश्नर ने तो डी.ए.वी. मॉडल स्कूल की उपलब्धियों को सुनकर कहा 'ओह माई गॉड'। उन्होंने कहा कि क्या नहीं है इस स्कूल में? ऐसा लग रहा है मानों आकाश के सारे तारे टूट कर डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर में आ गए हैं।

विद्यालय के प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्रुति कान्त पाल ने भी सफल विद्यार्थियों को अपनी शुभकामना प्रदान की। उन्होंने भी विद्यालय की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 13 अगस्त 2017 से 19 अगस्त 2017

विकलांगों के प्रति सद्भाव रखें

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यस्यानक्षा दुहिता जात्वास, कस्तां विद्वाँ अभिमन्याते अन्धाम्।
कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते, य ईं वहाते य ईं वा वरेयात्।।

ऋग् १०.२७.२२

ऋषिः **ऐन्द्रो वसुक्रः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(यस्य)** जिसकी, **(दुहिता)** पुत्री, **(जातु)** कदाचित्, **(अनक्षा)** बिन आँखों की, **(आस)** हो जाती है [तो], **(कः विद्वान्)** कौन विद्वान्, **(तां)** उसे, **(अन्धां)** अन्धी, **(अभिमन्याते)** मानता है।, **(कतरः)** कौन, **(तं प्रति)** उसके प्रति, **(मेनिं)** वज्र, **(मुचाते)** छोड़ता है, **(यः)** जो, **(ईं वहाते)** इसके भार को वहन करता है, **(यः वा)** या जो **(ईं वरेयात्)** इसे वरता है, इससे विवाह करता है।

● क्या तुम किसी विकलांग को देखकर सहानुभूति से द्रवित होने के स्थान पर कठोर हो जाते हो? क्या तुम सोचते हो कि विधाता ने ऐसे हाथ, पैर, अंगुलि, आँख, जिह्वा, श्रोत्र आदि किसी अंग से विकृत करके इसे कष्ट भोगने के लिए ही सृजा है?

यदि तुम्हारा अपना कोई सम्बन्धी विकलांग होता, तो भी क्या तुम उसके प्रति ऐसा ही व्यवहार करते? किसी अन्धे, काने, लूले, लंगड़े, बहरे, कुष्ठी आदि को देखकर तुम्हारी आँखे भर क्यों नहीं आतीं, हृदय दयार्द्र क्यों नहीं होता, ममता क्यों नहीं उद्वेल्लित होने लगती, सहायता की भावना क्यों नहीं बल लाती? तुम सहानुभूति प्रदर्शित करने के स्थान पर उल्टा अन्धे को अन्धा कहकर पुकारते हो और कटे पर नमक छिड़कते हो। क्या तुम उसे बेटा, भैया या बाबा सूरदास नहीं कह सकते? क्या तुम्हें पंगु को लंगड़दीन कहने में ही आनन्द आता है?

देखो, यदि किसी की पुत्री बिना आँखोंवाली होती है, तो क्या वह उसे अन्धी कहकर पुकारता है? नहीं, उसके लिए तो वह 'रानी बेटी' ही होती है। उसकी उस अन्धी पुत्री के भार को यदि कोई वहन करता है और उसका पाणिग्रहण करता है, तो क्या उसके प्रति उसके नेत्र सजल नहीं हो जाते और उसे वह साधुवाद नहीं देता? क्या वह उस सहायक के प्रति वाणी से वज्रपात करता है? क्या वह उसे बुरा–भला कहता है? क्या वह उसे मारने के लिए हाथ में वज्र उठाकर दौड़ता है? नहीं वह तो उसका माथा चूमता है और उसे शत–शत धन्यवाद देता है। ऐसा ही व्यवहार क्या उसे किसी दूसरे की पुत्री को अन्धी देखकर नहीं करना चाहिए? ऐसा ही दयालुता का बर्ताव क्या उसे अन्य किसी अंग से विकल भाई, बहन, पुत्री आदि को देखकर नहीं करना चाहिए?

अतः आओ, आज से विकलांगों की सहायता का व्रत लें। किसी भी विकलांग को देखकर उसके प्रति ममत्व की भावना मन में जागृत करें। स्वयं से व्यक्तिगत रूप में जो भी हो सके, उसके लिए करें और उसे समाज एवं राष्ट्र से भी सहायता दिलाने का प्रयत्न करें। विकलांगों के लिए आतुरालय, शिक्षणालय आदि खुलवाकर उनके प्रति जो हमारा ऋण है, उससे उऋण हों।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

अमृत–पान

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में "वैराग्य" विषय पर चर्चा हो रही थी कि संसार में असंख्य दुःख हैं। इन दुःखों से बचने का उपाय केवल वैराग्य है। बैरागी बनकर ईश्वरभक्ति में समय लगाते हुए लोग उसी वैराग कथा को सचमुच ऐसे सुनते रहते है जैसे पत्थर की मूर्तियाँ हो। वैराग्य का अर्थ न तो जड़ता है न पलायन।

दूसरी कथा में बताया कि मान–सम्मान का पात्र बनने के लिए निःसन्देह धनिक होना आवश्यक है, परन्तु केवल धन मान–सम्मान नहीं दिलाता प्रत्युत उसका त्याग मान–सम्मान दिलाता है। इससे आप समझ लीजिए कि किसका सम्मान हुआ? धन का या त्याग का?

आगे पढ़ेंगे दो लघु कथायें

अन्दर प्रविष्ट होकर देखो

"आओ! आज हमारे उद्यान (बाग़) में चलो।"

एक धनिक मित्र ने अपने दिल्ली दोस्त अभिन्न मित्र से कहा। मित्र मुस्कुराया और मौन हो गया। धनिक मित्र ने पुनः कहा– "मित्र! चलो हम अपने उद्यान में आपको आम खिलाएँगे," परन्तु इस बार भी मित्र ने चुप्पी ही साधे रखी।

धनिक मित्र इसी प्रकार समय–समय पर अपने मित्र को उद्यान में चलकर आम खाने का निमन्त्रण देता रहता था, परन्तु मित्र ने कभी भी उसका उत्तर नहीं दिया।

एक दिन जबकि आमों की ऋतु यौवन पर थी। जुलाई–अगस्त का महीना था। धनिक मित्र ने पुनः अपने मित्र को कहा– "चलो! आज बाग़ में चलकर आम खाएँ।"

मित्र फिर मुस्कुराया और कहने लगा– "क्षमा कीजिए, मुझे ऐसे आमों की आवश्यकता नहीं है।"

धनिक मित्र– तो प्रतीत होता है आपको मेरे आमों की वास्तविकता का पता नहीं है।

दूसरा मित्र– सब जानता हूँ। मैं एक दिन आपके बाग़ की ओर से निकल रहा था। बाहर एक पका हुआ आम गिरा पड़ा था। मैंने उसे उठाकर चूसा तो इतना खट्टा था कि पहला घूँट भी कठिनता से अन्दर ले जा सका और सच मानिए कि दो दिन दाँतों से खट्टापन दूर नहीं हुआ।

धनिक मित्र– (ठहाका लगाते हुए) अब ज्ञात हुआ कि क्यों मेरी प्रार्थना पर कोई उत्तर नहीं दिया जाता था, परन्तु तनिक सुनो! इसमें एक बुद्धिमत्ता है। लड़के हमारे बाग को खराब करते रहते थे। मेरे पिताजी कहीं से खट्टे आम ले आए और उनका बीज उद्यान के भीतर किनारे–किनारे लगा दिया। अब लड़के इतना उधम नहीं मचाते। आम को खट्टा पाकर चले जाते हैं, परन्तु तुम तनिक अन्दर प्रविष्ट होकर तो देखो तब तुम्हें ज्ञात होगा कि कैसी–कैसी उत्तम नस्लों के आम लगे हुए हैं। वे आम अत्यन्त मीठे और स्वादिष्ट हैं। किनारे के आमों के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

आम इस संसार में रहने वाले को भी जब धर्म के हरे भरे उद्यान में चलने के लिए कहा जाता है, तब जिन्होंने किनारे के ही आम चूसे हैं वे धर्म की फलवाड़ी और उद्यान में जाने का विचार ही नहीं करते। वे समझते हैं कि धर्म के उद्यान में खट्टे ही आम हैं– दुःख हैं, कष्ट हैं, आपत्तियाँ ही हैं, परन्तु तनिक अन्दर तो प्रविष्ट होकर देखो। माना कि धर्म का मार्ग श्रेयमार्ग है। निःसन्देह पहले–पहले यह मार्ग बहुत कठिन होता है। किनारे पर कँटेदार झाड़ियाँ हैं, परन्तु धर्म–उद्यान में आप जैसे–जैसे आगे बढ़ेंगे, आपको मीठे और स्वादिष्ट फल मिलेंगे। सुगन्ध से मस्तिष्क भरपूर हो जाएगा, परन्तु वे, जिन्होंने किनारे के ही आम चूसे हुए हैं, वे अन्दर तो प्रविष्ट ही नहीं होते और बाहर से शिकायतें करते हैं, उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि इस प्रकार की शिकायतों–ही–शिकायतों में इस ऋतु को व्यतीत न कर दें। अन्दर प्रविष्ट होकर देखें और आनन्द प्राप्त करें।

मेंढक और साँप

एक सुन्दर नदी बह रही थी। उसकी मस्ताना चाल प्रत्येक को अपनी ओर आकर्षित करती थी। उसका बल और पेंच खाते हुए जाना, एक लहर के पीछे दूसरी लहर का उठना, दूसरी लहर पर तीसरी का बलात् सवार होना और इसी क्रम में पानी का शोर मचाना और लहरों का उछलना– ऐसे दृश्य थे, जो आँख रखनेवाले किसी के लिए भी पर्याप्त थे, परन्तु देखने वाले ने और भी कुछ देखा और वह देखा, जिसे यद्यपि संसार में

शेष पृष्ठ 04 पर

योगेश्वर श्री कृष्ण का सत्य स्वरूप

● डॉ. महेश विद्यालंकार

भारत देश की विशेषता, महत्व, आकर्षण एवं सौभाग्य रहा कि इसे ऋषि, मुनि, ज्ञानी, तपस्वी प्रेरक महापुरुषों को विरासत व परम्परा मिली है। दिव्यात्मा पुण्यात्मा महापुरुषों की लम्बी परम्परा में भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगीराज श्री कृष्ण का नाम बड़ी श्रद्धा, सम्मान और पूज्यभाव में लिया जाता है। अधिकांश भक्तजन इनमें दैवीय युक्त पूज्य एवं आराध्य भाव रखते हैं। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रेरक, आकर्षक, लोकोपकारक, बहुआयामी तथा चुम्बकीय था। इसी कारण लाखों हजारों वर्षों के घाट-प्रतिघाट वात्याचक्रों विवादों आदि के होते हुए भी वे आज भी जनमानस के हृदयों में पूजित, सम्माननीय, स्मरणीय व अलौकिक महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हैं। श्रीकृष्ण पुण्यात्मा, धर्मात्मा, तपस्वी, त्यागी, योगी, वेदज्ञ, निरहंकारी, कूटनीतिज्ञ, लोकोपकारक, खण्ड-खण्ड भारत को अखण्ड देखने के स्वप्न द्रष्टा आदि अनेक, गुणों व विशेषणों से विभूषित थे। वे मानवता के रक्षक, पालक और उद्धारक थे। उनके जीवन का उद्देश्य था-**परित्राणाय साधूनाम्** सत्पुरुषों व धर्मात्माओं की रक्षा हो, तथा **विनाशाय दुष्कृताम्** पापी, अपराधी, तथा दुष्ट, प्रकृति के लोगों का दलन हो, और **धर्मसंस्थापनार्थाय**- सत्य धर्म, न्याय की सर्वत्र स्थापना होनी चाहिए। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति में उन्होंने दुःख, कष्ट विरोध एवं संघर्ष करते हुए सारा जीवन लगा दिया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर न जाने कितना लिखा पढ़ा सुना और बोला गया, फिर भी उनके जीवन और कार्यों की वास्तविक प्रमाणिक सत्य स्वरुप जानकारी हमारे से ओझल हो रही है। भागवद् पुराणों लोक साहित्य, कथाओं, रासलीलाओं, कृष्णलीलाओं, सीरियलों पिक्चरों नाटकों आदि में तमाशा बन रहे हैं। अधिकांश लोग और आज की युवापीढ़ी जो योगेश्वर श्रीकृष्ण का ऐतिहासिक जीवन स्वरूप मान रहे हैं। यह देश, धर्म, मानव जाति एवं इतिहास के लिए दुर्भाग्य पूर्ण है।

संसार के इतिहास में ऐसा निराला, विलक्षण, अद्भुत, अद्वितीय विश्ववन्द्य महापुरुष न मिलेगा। यदि किसी महापुरुष में वेद, दर्शन, योग अध्यात्म, इतिहास, साहित्य, संगीत, कला, राजनीति, कूटनीति आदि सभी एकत्र देखने हैं तो वे अकेले देवपुरुष श्रीकृष्ण हैं। सच यह है कि दुनियाँ के नादान लोगों ने उस योगीराज श्रीकृष्ण का भेद नहीं जाना। जिनका जन्म जेल में हुआ। जन्म से पहले ही मृत्यु के वारन्ट निकल गए। कैसी विचित्र बिडम्बना रही जब जन्म हुआ उस समय उनके पास कोई खुशी मनाने वाला, बधाई देने वाला, और मिठाई बाँटने वाला नहीं था। ऐसे ही मृत्यु के समय भी उनके पास कोई रोने वाला नहीं था। विमाता यशोदा की गोद में पले, विपरीत परिस्थिति के कारण मामा को मारना पड़ा। राज्य छोड़कर द्वारिका में जाना पड़ा। सत्य, न्याय, धर्म और मानवता की रक्षा के लिए नाना रूप धारण करने पड़े। कई प्रकार की भूमिकाएँ निभाईं। कई बार अपमान, विरोध, संघर्ष का जहर पीना पड़ा। सम्पूर्ण जीवन में कभी निराश, हताश, उदास एवं दुःखी नजर नहीं आए। यही उसके जीवन की समरसता एवं महापुरुषत्व है। उनके जीवन से ऐसी शिक्षा एवं प्रेरणाएँ लेनी चाहिए। महाभारत में अनेक विशेषताओं से युक्त अनेक महापुरुष हुए, मगर सभी का जन्मदिन नहीं मनाया जाता है। हजारों वर्षों के बाद बिना सूचना पत्रक, विज्ञापन आदि के श्रीकृष्ण का जन्मदिन सबको याद है। बड़ी धूमधाम के साथ सजावट, बनावट के साथ पूज्य भावना से जन्मोत्सव मनाया जाता है। जो महापुरुष संसार, मानवता सत्य, धर्म-न्याय एवं **सर्वे भवन्तु सुखिनः** के लिए जीता और मरता है उसका जन्मोत्सव सभी जन श्रद्धा, भक्ति व सम्मान से मनाते हैं। तभी महाभारतकार व्यास को ससम्मान कहना पड़ा- "**कृष्णं वन्दे जगदगुरुम्**" पूरे महाभारत में सर्वाधिक पूजनीय, अग्रणी, वन्दनीय तो श्रीकृष्ण को माना गया है। श्री कृष्ण का असली स्वरूप और चरित्र महाभारत में ही मिलता है। सम्पूर्ण महाभारत में तटस्थ रहते हुए भी सत्य, न्याय-धर्म के लिए अहं भूमिका निभाते हैं। वहाँ वे राष्ट्रनायक के रूप में दिखाई देते हैं। तभी द्रोणाचार्य को कहना पडा-

यतो धर्मस्ततः कृष्णः यतः कृष्णस्ततो जयः

जहाँ धर्म है वहाँ श्रीकृष्ण हैं और जहाँ श्रीकृष्ण हैं वहाँ निश्चय विजय होगी। महाभारत में श्रीकृष्ण ने अपनी भूमिका बड़ी कुशलता निपुणता, कूटनीति एवं सक्रियता से निभाई। संसार उनके कर्म कौशल के आगे नतमस्तक है।

अपने इतिहास, संस्कृति, धर्मग्रन्थों महापुरुषों आदि को विकृत, कलंकित, पतित एवं छेडखानी करने वाली संसार में जाति है तो वह हिन्दू है, जिसने अपने इतिहास, पूर्वजों महापुरुषों के सत्य यथार्थ स्वरूप को समझा, जाना, माना, और अपनाया नहीं है। जैसा आज योगीराज भगवान श्रीकृष्ण का अश्लील, भोगी, विलासी, लम्पट, पनघट पर गोपिकाओं को छेड़ने वाला आदि दिखाया, सुनाया पढ़ाया तथा बताया जा रहा है। वैसा सच्चे अर्थ में उनका प्रमाणिक जीवन चरित्र नहीं था। उन्हें चोरजार शिरोमीण, माखनचोर आदि कहकर लांछन लगाए गए। मीडिया श्रीकृष्ण के नाम पर अश्लीलता, श्रृंगार, वासना, कामुकता, ग्लैमर, अन्धविश्वास, पाखण्ड आदि दिखा सुना और फैला रहा है। आज की पीढ़ी इन्हीं बातों को सच व ऐतिहासिक मान रही है। कोई रोकने टोकने व कहने वाला नही है। एक आर्यसमाज है जो सत्य को सत्य और गलत को गलत कहने वाला था, वह आज स्वयं अपने में उलझा पड़ा है। उसकी आवाज़ में वह तीक्ष्णता और पैनापन नहीं रहा। इसीलिए तेजी में ढोंग, पाखण्ड, अन्ध-श्रद्धा, अन्धविश्वास गुरुडम आदि फैल रहा है। महापुरुषों की परम्परा में किसी को योगीराज की उपाधि, सम्मान, पहचान एवं पूज्यभाव मिला है तो वे श्रीकृष्ण हैं। वास्तव में श्रीकृष्ण का गुण, कर्म, स्वभाव, आचरण, जीवनदर्शन ऐसा नहीं था, जो आज मिलता है। असली उनका चरित्र महाभारत में है जहाँ वे सर्वमान्य, सर्वपूज्य, योगी उपदेष्टा, मार्गदर्शन, विश्ववन्द्य, नीतिनिपुण, सत्य, न्याय, धर्म के पक्षघर के रूप में दिखाई देते हैं। जब वर्तमान में प्रदर्शित जीवन चरित्र की तुलना महाभारत के श्रीकृष्ण से करते हैं, तो रोना आता है। गीता जैसा अमूल्य ग्रन्थ महाभारत का ही अंग है। विश्व में धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में भारत को गीता से सम्मान मिला और पहचान बनी। गीता में श्रीकृष्ण ने जो जीवन जगत् के लिए अमर उपदेश व सन्देश दिए हैं वे युगों युगों तक जीवित जागृत रहेंगे। गीता भागने का नहीं जागने की दृष्टि, विचार एवं चिन्तन देती है। जीवन जगत में रहते हुए निष्काम कर्म करते हुए जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुँचने का गीता दिव्य सन्देश देती है। गीता में ज्ञान-विवेक वैराग्य पूर्ण श्रीकृष्ण योगी के रूप में सामने आते हैं। जैसे कोई हिमालय की चोटी पर खड़ा योगी आत्मा-परमात्मा, जीवन-मृत्यु भोग, योग, ज्ञान, कर्म, भक्ति आदि का चिन्तन प्रेरणा व सन्देश दे रहा हो। तत्वज्ञ पाठक गण सोचें विचारें और समझें-कहाँ गीता के श्रीकृष्ण और पुराणों कथाओं कल्पित कहानियों के श्रीकृष्ण हैं? हमने उन्हें क्या से क्या बना दिया है। अमृत से निकालकर उन्हें कीचड़ में डाल रहे हैं? महाभारत और गीता के श्रीकृष्ण को भूलकर छोड़कर आज समाज पुराणों रसीली कथाओं के श्रीकृष्ण के चरित्र को पकड़ रहे हैं। संसार का दुर्भाग्य है कि श्रीकृष्ण के सत्यस्वरूप जीवनादर्श के साथ अन्याय व धोखा हो रहा है। पुराणों में श्रीकृष्ण को युवा व वृद्ध होने ही नहीं दिया, बाल लीलाओं में उनका सम्पूर्ण जीवन अंकित व चित्रित होकर रह गया। जिन्होंने कभी भीख नहीं माँगी थी, आज हम उनके चित्र व नाम पर धन बटोर व भीख माँग रहे है। किसी विदेशी चिन्तक ने श्रीकृष्ण के वर्तमान स्वरूप को देखकर टिप्पणी की थी-यदि भारत ने सबसे अधिक अन्याय अत्याचार किया है तो वह अपने महापुरुषों के चरित्र के साथ किया है। उनके असली स्वरूप को भुलाकर विकृत कलंकित रूप में दिखा रहे हैं। इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। ऋषि दयानन्द से बढ़कर सत्य वक्ता और प्रमाणिक कौन हो सकता है। उन्होंने श्रीकृष्ण के उज्ज्वल व प्रेरक चरित्र की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। "देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तय है। उनका गुण-कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। श्रीकृष्ण ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा कहीं भी नहीं लिखा है।"

महाभारत में राधा का कहीं नाम नहीं आता है। किन्तु आज राधा के नाम के बिना श्रीकृष्ण की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। राधा यशोदा के भाई रायण की पत्नी थी। पुराणों लोक कथाओं, कहानियों साहित्य आदि में श्रीकृष्ण के चरित्र को कलंकित व विकृत, बेदनाम करने के लिए राधा का नाम जोड़ा गया। इतिहास में मिलावट की गई। लोगों को नैतिक, धार्मिक जीवन मूल्यों से पथभ्रष्ट करने के लिए श्रीकृष्ण और राधा के नाम पर अश्लील, व श्रृंगारिक कूड़ा-करकट इकट्ठा कर लिया गया। जो आज फल फूल रहा है। श्रीकृष्ण पत्नीव्रत थे उनकी धर्म पत्नी रुक्मिणी थी। श्रीकृष्ण के जीवन वृत में तो रुक्मिणी का नाम आता है मगर व्यावहारिक रूप में मन्दिरों, लीलाओं, कथाओं झाकियों आदि में रुक्मिणी को श्रीकृष्ण के साथ नहीं दिखाया जाता है। यह रुक्मिणी के साथ पाप और अन्याय है। सच्चा इतिहास इसे कभी माफ नहीं करेगा। श्रीकृष्ण जैसे एक पत्नीव्रती, ज्ञानी, संयमी मर्यादा पालक महापुरुष व्यभिचारी एवं परस्त्री गामी कैसे हो सकते हैं। श्रीकृष्ण संसार के अद्वितीय महापुरुष थे।

आर्य समाज का उदय सत्य के प्रचार-प्रसार और वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए हुआ। महापुरुषों के उज्ज्वल प्रेरक चारित्रिक-गरिमा की रक्षा का सदा पक्षधर रहा है। उसका नारा था- जागते रहो! जागते रहो! स्वयं जागो और दूसरों को जगाओ। आज संसार जिस रूप में श्रीकृष्ण को मानती जानती व समझती है उस विकृत,

शेष पृष्ठ 09 पर

वेद के प्रादुर्भाव की कहानी

● भद्रसेन

समानं मन्त्रभिमन्त्रये वः –ऋ 10,191,3

वः =तुम्हारे लिए, बात को समझने वालों की लिए, ज्ञान के पात्रों के लिए, ज्ञान के अभिलाषियों के लिए समानम् = एक जैसे, सब पर समान रूप से लागू होने वाले मन्त्रम् = (विशेष शब्दों के समूह को, ऐसे मन्त्र से प्रकट होने वाले अर्थ/भाव को) विचार को, रहस्य को, सन्देश को, प्रेरणा को, संसार की व्यवस्था को अभिमन्त्रये = बोलता हूँ, प्रकट करता हूँ, देता हूँ, प्रेरित करता हूँ, सामने लाता हूँ।

व्याख्या

वः तुम सब ज्ञान प्राप्त कर सकते हो, अतः ज्ञान के प्रात्र हो, क्योंकि तुम्हारा प्रत्येक कार्य, व्यवहार ज्ञान के बिना नहीं चलता, अतएव तुम ज्ञान के अभिलाषी हो। मनुष्यों का ज्ञान अधिकतम नैमित्तिक है। प्रत्येक मनुष्य को किसी निमित्त = सहायक रूपी शिक्षक, गुरू से ही विद्या प्राप्त होती है, उसे स्वयं विद्या नहीं आती। यह नियम सभी स्थानों, कालों और व्यक्तियों पर समान रूप से पहले भी था, आज भी है। **यतो हि** प्रभु के बनाए नियम सभी के लिए समान रूप से हैं। इन में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं है। हमने कुछ को विशेष सिद्ध करने के लिए विशेष कल्पनाऐं की हैं। पर प्रकृति के नियम सर्वत्र सदा अटल, एकरस, अटूट हैं। उनमें किसी के लिए किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

समानम् सभी स्थानों, कालों, व्यक्तियों पर जो बिना पक्षपात, भेदभाव के लागू होता है। जिसमें बिना पक्षपात काल, स्थान, व्यक्ति की दृष्टि से किसी प्रकार की भिन्नता नहीं होती। जैसे भगवान के बनाए संसारी प्राकृतिक पदार्थों जल, वायु सूर्य आदि के व्यवहार में देखते हैं। वे सभी व्यक्तियों, कालों, स्थानों के प्रति एक जैसा ही व्यवहार, अपने कार्य करते हैं। प्रकृति की ओर से किसी का भी मुँह देखकर भेद भाव, व्यवहार नहीं होता। हम ने चाहे कितनी कहानियाँ, घटनाएँ बना रखी हैं। पर व्यवहार में कहीं कैसा भी भेदभाव नहीं है। केवल कल्पना में ही भेदभाव चर्चित होता है।

व्यवहार में मिलने वाली इसी समानता को ही सामने रखकर इसी मन्त्र में है– **समानेन वो हविषा जुहोमि वः** = तुम्हारे प्रति समानेन = एक जैसी हविषा = (हवन सामग्री की तरह) देने लेने की वस्तुओं को जुहोमि = (आहुति के समान) देता हूँ, व्यवस्था करता हूँ, जैसे जल सभी की प्यास बुझा कर शान्ति देता है, स्नान, सफाई द्वारा सभी की गन्दगी दूर होकर शुद्धि आती है। जैसे कि हम देखते हैं, कि यज्ञ (अग्निहोत्र) करने वाले एक जैसी ही घी, सामग्री की आहुति देते हैं। जो पहले से सभी के लिए समान रूप से बनाकर रखी गई होती है। शास्त्र विधि में जो विहित हैं वहाँ सभी यज्ञ करने वाले समान मन्त्रों का ही पाठ करते हैं। ऐसे ही हम देखते हैं, कि हमारे चारों ओर परमात्मा की बनाई हुई (सूर्य, वायु , जल, धरती और उसके अन्न, धातु, खनिज आदि) चीजें भी सभी के लिए एक जैसी ही होती हैं। उन के व्यवहार, प्रभाव में किसी के प्रति किसी प्रकार का अंतर नहीं होता। जैसे एक कर्ता की सभी रचनाओं में कला की दृष्टि से एकरूपता होती है। ऐसे ही संसार और वेद रूपी ईश्वरीय ज्ञान में एकरूपता होनी चाहिए क्योंकि जब दोनों एक ही रचनाकार की रचनाएँ हैं जैसे भूगोल और सच्चे भूगोल पुस्तक में समानता प्राप्त होती है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने ईश्वरीय ज्ञान की एक पहचान प्राकृतिक, नियमों, पदार्थों से एकरूपता बताई है। समानम् यहाँ मंत्र का विशेषण है।

मन्त्रम् शब्द मन और मत्रि धातु से बनता है, मन – मनन, विचार, अवबोधन के अर्थ में है, तो मत्रि–गुप्त रहस्य, छिपी बात के अर्थ में है। इसीलिए आज भी यही मन्त्री बनते हुए दो प्रतिज्ञाएँ करते हैं। अपने कार्य के विचार, योजना की और अपेक्षित रहस्य, भेद गुप्त रखने की। हमारे साहित्य में वेद के लिए जहाँ मंत्र शब्द आया है। (**प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्**। ऋ– । 40.5 यजु. 34,57) वहां उस की एक ईकाई को भी मन्त्र कहते हैं। क्योंकि उन में विचार भरी, रहस्यपूर्ण बात, चर्चा होती है। इसी प्रकार विशेष शब्दों के समूह को मन्त्र कहते हैं। जो कि गायत्री, अनुष्टुप् आदि अनेक छन्दों, पद्यों में होते हैं। मन्त्र शब्द इसके साथ अपने शब्दों से कहे गए अर्थ, भाव, बात, वस्तु की ओर भी संकेत करता है।

अभिमन्त्रये– यह शब्द एक विशेष भावना दे रहा है, कि ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार है। उसका हमारी तरह मुख, कण्ठ, दन्त, जिह्वा आदि बोलने के अंग नहीं हैं। अतः शरीर रहित प्रभु हमारी तरह बोल नहीं सकता। इसीलिए अभिमन्त्रये शब्द कह रहा है, कि ईश्वर सर्वशक्तिमान होने के साथ सब के हृदयों को अन्दर से प्रेरणा देता है, नियंन्त्रण करता है। वह सर्वान्तर्यामी संसार में पहले–पहल आए व्यक्तियों के हृदय में ज्ञान की प्रेरणा देता है। जैसे मैसमरेजम वाले या योगी विशेष को आन्तरिक प्रेरणा देते हैं। ऐसे ही ईश्वर ने पहले–पहल के व्यक्तियों के हृदय में वेद विद्या का संचार किया। क्योंकि उस समय पढ़ने–पढ़ाने का और कोई विकल्प नहीं था।

जैसे अन्य कोई विकल्प न होने से ईश्वर ने सूर्य, वायु आदि का प्रथम काल में निर्माण किया। ऐसे ही ज्ञान विकास का और कोई उपाय न होने से वेद के रूप में ज्ञान दिया। वेद का एक अर्थ ज्ञान भी है और विजडम शब्द इसकी पुष्टि करता है। सूर्य आदि की तरह वेद को भी वेद ने प्रथमज कहा है। जिसका अर्थ है, जो प्रारम्भ में हुआ।

182 शालीमार नगर, होशियार पुर पंजाब

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

अमृत–पान ...

उत्पन्न होने वाले सब प्रतिदिन देखते हैं, परन्तु देखते हुए भी नहीं देखते।

नदी के बहाव के साथ एक साँप और एक मेंढक बहते चले जा रहे थे। इतने में साँप ने मेंढक को मुँह में पकड़ लिया। साँप के मुँह में जकड़े हुए मेंढक ने भी उस समय मुँह खोल रखा था और मच्छरों का शिकार कर रहा था। साँप अब धीरे–धीरे किनारे की ओर जाने लगा। मेंढक भी मच्छरों को खा रहा था और आने वाले सङ्कट से सर्वथा अनजान था। साँप अब तीव्रता से किनारे की ओर आया और आते ही मेंढक को भूमि पर पटककर मार डाला और फिर निगल गया।

यह इसी बहती हुई नदी में हुआ। पढ़नेवाले कहेंगे कि यह तो साधारण–सी बच्चों की कहानी है, परन्तु देखने वाला कहता है कि यही साधारण–सी कहानी तो जीवन का रहस्य है। यही दृश्य तो जीवन और मृत्यु के रहस्य का समाधान है।

जानते हो यह नदी क्या है? यह है यही संसार, जिसके अन्दर हम सब बहे चले जा रहे हैं। यह मेंढक कौन है? यही मनुष्य जिसे साँपरूपी काल ने अपने तीक्ष्ण जबड़ों में पकड़ा हुआ है, परन्तु इस बात से अनभिज्ञ मनुष्य विषयों के मच्छरों को हड़प किए जा रहा है। वह नहीं जानता कि मैं तो किसी और का ही शिकार बन चुका हूँ, फिर मैं किसका शिकार करूँ। जो स्वयं शिकार है, वह कैसे शिकारी बने, परन्तु सार्वभौमिक और सर्वत्र होने वाली गलती देखिए कि यह शिकार शिकारी बनता है, परन्तु मौत का शक्तिशाली हाथ जब अपनी गर्दन पर पड़ता है, तब आँख खुलती है। देखने वाले ने तो जो कुछ देखा वह बतला दिया, परन्तु पढ़ने और सुनने वालो! तुमने भी इस रहस्य को जाना। एक कवि ने कहा है–

किश्तिए उम्र रवाँ पर सवार बैठे हैं।
सवार खाक हैं बे–इखतियार बैठे हैं।।

सचमुच हम नहीं जानते कि कब कालरूपी साँप हमें हड़प कर ले।

हम प्रतिदिन लोगों को काल का शिकार होते हुए देखते हैं, परन्तु फिर भी आलस्य और गलती देखिए कि हम विषयों को छोड़ने का नाम नहीं लेते और न ही काल से छुटकारा प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। काल से अनभिज्ञ, विषयों में फँसे हुए हम आने वाले सङ्कट से अनभिज्ञ रहते हैं, परन्तु आँखें बन्द कर लेने से बिल्ली कबूतर को छोड़ नहीं देती। हम सदा इस संसाररूपी नदी में अनगिनत मेंढकों को साँप का शिकार होते पाते हैं, परन्तु फिर भी उसी साँप से बचने का कोई उपाय नहीं किया जाता। वेद भगवान् बताता है कि जिस व्यक्ति ने मुझे अपना सखा बना लिया, मृत्यु उसके लिए मृत्यु नहीं, अपितु जीवन है। फिर क्या हम इस सङ्कट से बचना चाहते हैं? आह! मृत्युके तीखे पञ्जों में जकड़े हुए लोग की इस घोषणा पर ध्यान नहीं देते और विषयासक्त होकर अपने जीवन को नष्ट कर रहे हैं।

.... क्रमशः

योगेश्वर कृष्ण का युद्ध भूमि में अर्जुन को दिया गया आत्मज्ञान विषयक वेदानुकूल उपदेश

● मनमोहन कुमार आर्य,

भारत के इतिहास में रामायण एवं महाभारत ग्रन्थों का विशेष महत्व है। ये दोनों सत्य इतिहास के ग्रन्थ हैं। दुःख है कि हमारे स्वार्थ बुद्धि के कुछ पूर्वजों ने इनमें बड़ी मात्रा में प्रक्षेप किए हैं। आर्यसमाज शास्त्रों की उन्हीं बातों को स्वीकार करता है जो बुद्धिसंगत, व्यावहारिक, अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णनों से रहित, पूर्वापर प्रसंग के अनुरूप, सृष्टिक्रम और देश, काल के अनुरूप हों। इस दृष्टि से आर्यसमाज के विद्वानों ने इन ग्रन्थों के प्रक्षेप से रहित अनेक ग्रन्थों की रचना वा सम्पादन किया है। इस क्रम में कीर्तिशेष स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने रामायण एवं महाभारत के विशिष्ट संस्करण तैयार किए जो आज भी आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध प्रकाशक **'विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली–110006'** से उपलब्ध हैं। रामायण पर अनेक अन्य विद्वानों ने भी कार्य किया है। कुछ विद्वान हैं पं. आर्यमुनि जी और महात्मा प्रेमभिक्षु जी। इनके संस्करण भी आर्यसमाज के प्रकाशकों से उपलब्ध हैं। अन्य भी कुछ विद्वान हैं जिनके रामायण पर संस्करण उपलब्ध होते हैं। महाभारत पर पं. सन्तराम जी ने शुद्ध महाभारत नाम से एक ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन पहले दयानन्द संस्थान, दिल्ली से हुआ था व उसके बाद दो–तीन खण्डों में मथुरा से सत्य प्रकाशन द्वारा तपोभूमि मासिक पत्रिका के विशेषांक रूप में किया गया। हमें इनमें से अनेक ग्रन्थों को पढ़ने का सुअवसर मिला है। पाठक चाहें तो इनका लाभ उठा सकते हैं। हमारे पौराणिक प्रकाशकों के इन दोनों ग्रन्थों के संस्करण प्रक्षेपरहित न होने से उनकी महत्ता इसलिए कम है कि पाठकों को सत्य व असत्य दोनों प्रकार की घटनाओं को पढ़ना पड़ता है और वे अपने विवेक से सत्यासत्य का निर्णय नहीं कर पाते जिससे अन्धविश्वास व पाखण्ड फैलता है।

'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारत का एक भाग है। इसके दूसरे अध्याय में योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का वह उपदेश भी है जो उन्होंने अपने शिष्य व मित्र अर्जुन को महाभारत युद्ध की रणभूमि कुरुक्षेत्र में दिया था। आज हम उसी आत्मज्ञान विषयक श्रीकृष्ण जी के उपदेश का कुछ भाग भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। गीता में कृष्ण जी द्वारा अर्जुन को दिया गया यह उपदेश संजय द्वारा धृतराष्ट्र के पूछने पर उन्हें सुनाया गया था। श्री कृष्ण जी ने अर्जुन का मोह व भ्रम दूर करने के लिए कहा कि हे अर्जुन! तुझको यह अनार्यों वाला व्यवहार जो स्वर्ग प्राप्ति में बाधक और अपयशकारक है, वह युद्ध के इस कठिन समय में कहाँ से आ गया? कृष्ण जी ने कहा कि **हे अर्जुन ! निर्बलता को मत प्राप्त हो। तुझ में यह निर्बलता उचित प्रतीत नहीं होती। अपने हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्याग दे। हे शूरवीर ! दुर्बलता त्यागकर खड़ा हो जा।** अर्जुन ने कृष्ण जी को कहा कि हे शत्रुघातिन् मधुसूदन (श्रीकृष्ण) ! मैं पूजा के योग्य भीष्म पितामह और अपने गुरु द्रोणाचार्य के सामने खड़ा होकर युद्ध में बाणों से कैसे लडूँगा। अर्जुन ने श्री कृष्ण जी को युद्ध न करने के अन्य अनेक कारण भी गिनाए। उनका समाधान करते हुए श्रीकृष्ण जी ने कहा कि **तू अशोचनीयों का शोक करता है और ज्ञानियों जैसी बातें करता है। बुद्धिमान् लोग मरों और जीवितों का शोक नहीं किया करते। यह नहीं है कि मैं और तू और ये राजा लोग कभी न थे, और न यह है कि हम सब इसके पश्चात् न होंगे। कृष्ण जी अर्जुन को समझा रहे हैं कि सबका जीवात्मा अजर व अमर होने से हर काल में विद्यमान रहता है।**

कृष्ण जी ने अर्जुन को कहा कि जिस प्रकार प्राणी के इस देह में बालकपन, जवानी और बुढ़ापे की अवस्थाएँ होती हैं वैसे ही मृत्यु होने पर उसे दूसरे देह की प्राप्ति भी होती है। धीर पुरुष अपने देह के प्रति कभी मोह व भय नहीं करते। हे कुन्तीपुत्र भरतवंशी ! इन्द्रियों के विषय रूप, रस, गन्ध, शब्द व स्पर्श आदि तो शीत्–उष्ण व सुख–दुःख देने वाले हैं और ये आनी–जानी वस्तु हैं अर्थात् अनित्य हैं। उनको तू सहन कर। हे पुरुषार्थियों में श्रेष्ठ अर्जुन ! सुख दुःख को समान समझने वाले जिस धीर पुरुष को ये इन्द्रियों के विषय सताते नहीं हैं, वही पुरुष अमर होने को समर्थ है। असत् का भाव, सत्ता व अस्तित्व नहीं होता और सत् वस्तुओं का अभाव नहीं होता। तत्वदर्शियों ने सत् और असत् दोनों को यथार्थ स्वरूप में देख व जान लिया है। कृष्ण जी कहते हैं कि जिस ईश्वर से सृष्टि का यह फैलाव हुआ है उसे तू अविनाशी जान। **कृष्ण जी कहते हैं कि इस अविनाशी जीवात्मा का कोई विनाश नहीं कर सकता।** नित्य, अविनाशी, शरीरधारी, अतीन्द्रिय जीवात्मा के यह देह वा शरीर अन्त वाले अर्थात् नश्वर हैं। इसलिए हे भरतवंशी तू युद्ध कर। हे अर्जुन ! जो मानव शरीर में विद्यमान जीवात्मा को मारने वाला समझता है और जो इस जीवात्मा को मारा गया समझता है, वे दोनों ठीक नहीं समझते। वह अज्ञानी हैं। **क्योंकि न यह जीवात्मा किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा ही जाता है। यह जीवात्मा न कभी उत्पन्न होता है और न कभी मरता है। यह होकर फिर न होगा, ऐसा नहीं है। यह जीवात्मा अजन्मा, नित्य, सनातन और प्राचीन है। शरीर के मारे जाने पर भी यह मारा नहीं जाता अर्थात् इसका अस्तित्व बना रहता है।**

श्री कृष्णजी ने अर्जुन को कहा कि पार्थ (अर्थात् पृथा के पुत्र) जो इस अजन्मा, अमर, अविनाशी जीव को नित्य जानता है, वह पुरुष क्योंकर किसको मरवाता और किसको मारता है? किन्तु जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को उतार कर दूसरे नवीन वस्त्रों को ग्रहण कर लेता है, ऐसे ही देहधारी पुराने देहों को त्यागकर अन्य नए देहों को पा लेता है। जीवात्मा को शस्त्र काटते नहीं हैं, इसको अग्नि जला नहीं सकती। जल इसे गला नहीं सकता और वायु जीवात्मा को सुखाती नहीं है। यह आत्मा अच्छेद्य अर्थात् न कटने वाला, न जलने वाला, न गलने वाला और न सूखने वाला है। यह आत्मा सनातन, अचल, स्थिर, सर्वत्र पहुंचने वाला और नित्य है। मनुष्य का जीवात्मा इन्द्रियों का विषय नहीं होने से अव्यक्त है। यह चित्त का विषय न होने से अचिन्त्य है, विकार को प्राप्त न होने से यह अविकारी कहा जाता है। **आत्मा ऐसा है, इस आत्मा को इस प्रकार का जानकर अर्जुन तू शोक नहीं कर सकता।** यदि तू इस जीवात्मा को नित्य–नित्य उत्पन्न होने वाला और नित्य–नित्य मरनेवाला भी समझता है, तो भी हे अर्जुन तू इसका शोक नहीं कर सकता। **श्री कृष्ण जी कहते हैं कि हे अर्जुन ! उत्पन्न हुए मनुष्य की मृत्यु अवश्यम्भावी है, मरे हुए मनुष्य की जीवात्मा का जन्म भी अटल है। जिसको हटाया या बदला नहीं जा सकता, उसके विषय में तू शोक नहीं कर सकता।** हे भरतवंशी ! सब जीव पहले अप्रकट थे, बीच में प्रकट हो गए हैं, अन्त में भी छिप जाने वाले ही हैं, इससे इनमें शोक क्या करना है? कृष्ण जी कहते हैं कोई इस जीव को देखकर आश्चर्य करता है, कोई इसका वर्णन इसे आश्चर्य मानकर करता है, कोई इसे सुनकर आश्चर्य करता है और कोई इसे सुनकर भी जानता नहीं है। **हे भरतवंशी अर्जुन ! सब के देह में यह देहवाला आत्मा सदा अवध्य है। यह नहीं मारा जा सकता है। इसलिए अर्जुन तू सब प्राणियों के मरने पर शोक नहीं कर सकता।**

श्री कृष्ण जी अर्जुन को कहते हैं कि तुझे अपने धर्म का विचार करके भी डरना नहीं चाहिए क्योंकि धर्मयुक्त युद्ध के अतिरिक्त क्षत्रिय का अन्य किसी प्रकार से कल्याण नहीं है। कृष्ण जी अर्जुन को यह भी समझाते हैं कि तू यह समझ कि तुझे अकस्मात् स्वर्ग का खुला हुआ द्वार मिल गया है। ऐसे युद्ध को तो सौभाग्यशाली क्षत्रिय पाते हैं। यदि तू इस धर्मयुक्त संग्राम को नहीं करेगा तो फिर अपने धर्म और यश को छोड़कर पाप को पाएगा। लोग तेरे अपयश की चर्चा सदा–सदा किया करेंगे। हे अर्जुन ! कीर्तिमान् की अपकीर्ति मौत से भी बढ़कर होती है। तेरे युद्ध न करने पर महारथी शूरवीर लोग तुझको डर कर युद्ध से हटा हुआ समझेंगे। जिनके सामने तू बहुत मान–सम्मान पाया हुआ है, युद्ध न करने पर उन लोगों में तू हलकेपन को प्राप्त होगा। तेरे शत्रु तेरे सामर्थ्य की निन्दा करते हुए तुझे बहुत सी गालियाँ देंगे। भला इससे बढ़कर तेरे लिए क्या दुःख हो सकता है? यदि तू मारा गया तो स्वर्ग को पावेगा और जीतकर पृथिवी के सुखों को भोगेगा। इसलिए हे कुन्ती पुत्र ! तू निश्चय करके युद्ध के लिए खड़ा हो जा। सुख और दुःख को, लाभ और हानि को, जय और पराजय को एक सा समझकर युद्ध के लिए तत्पर हो जा, इसका दृढ़ निश्चय कर ले। ऐसा करने से तुझे पाप नहीं लगेगा।

श्री कृष्ण जी के उपदेश सुनकर अर्जुन का मोह व शंकाएँ दूर हो गईं थीं और वह युद्ध के लिए तैयार हो गया था। उसने युद्ध किया और पाण्डवों की विजय हुई। आज भी लोग कृष्ण जी, अर्जुन, भीम आदि की वीरता व युद्ध कौशल की प्रशंसा करते हैं और उनसे प्रेरणा लेते हैं। युधिष्ठिर का

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

महर्षि, सत्यार्थ प्रकाश और मैं

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

पिछले अंक से शेष

महर्षि दयानन्द के 178 वें जन्म दिवस के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से भेंट की। महर्षि दयानन्द के प्रति उद्‌गार प्रकट करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा–

इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि देश की स्वतंत्रता और हमारा सब का 'अस्तित्व' महर्षि दयानन्द सरस्वती के कारण ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा ही स्वराज्य अर्थात् स्वतंत्रता आन्दोलन की नींव रखी गई थी। अस्तित्व शब्द के गूढ़ार्थो को समझिए स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत की शासन व्यवस्था कैसी होनी चाहिए इसके लिए सत्यार्थ प्रकाश में 'राजधर्म' शीर्षक से एक समुल्लास है। इस अध्याय को ही दृष्टिगत रख कर इस लेख का ताना बाना बुना।

आधुनिक रूप में राजधर्म के प्रावधानों को ढाला जाए तो कहना होगा महर्षि दयानन्द सम्पूर्ण देश के लिए राष्ट्रपति शासन प्रणाली के पक्षधर स्पष्टतया प्रतीत होते हैं। राष्ट्रपति तानाशाह, निरंकुश न हो सके इसलिए मंत्रीमण्डल का प्रावधान किया, जिसका निर्णय मानने के लिये वह बाध्य होगा। विधायिका शक्तियों का वर्गीकरण विधायिका (समस्त प्रकार की शिक्षा–भौतिक और अध्यात्म सहित) राजार्य सभा (विभिन्न मंत्रालयों का गठन व संचालन) धर्मार्य सभा पूजा–पद्धति नहीं, बल्कि उक्त दो संस्थाएँ अपना–अपना कार्य–व्यापार पूरी निष्ठा व प्रकृष्ट ईमानदारी से कर रही हैं अथवा नहीं के ऊपर पूर्ण व सतत निगरानी रखना, जिससे भ्रष्टाचार उत्पन्न ही न हो। केन्द्र से लेकर प्रान्त जिला व ग्राम स्तर तक 'सभा' रहेंगी। इन सभाओं के प्रत्याशियों की अर्हता–पूर्णतया शिक्षित, निष्कलंक चरित्रवान लोक कल्याण की भावना से संयुक्त व्यक्ति होंगे (तुलनात्मक रूप में भारतीय संविधान के प्रावधान देखिए) सभा का निर्णय बहुमत के आधार पर होगा और सर्वमान्य होगा। संवैधानिक व्यवस्थाएँ सम्पूर्ण राष्ट्र के समस्त नागरिकों पर लागू होंगी। असंतोष पैदा करने वाली आरक्षण की कल्पना भी नहीं थी। रक्षा प्रणाली नवीनतम शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होगी। सैन्य बल इतना अधिक प्रभावशाली हो कि शत्रु–पक्ष आक्रमण करने की सोच भी न सके।

न्यायव्यवस्था पक्षपातरहित और कठोर होगी। इस व्यवस्था की विशेषता यह होगी कि सामान्य जन की अपेक्षा अधिकारी वर्ग आभिजात्य वर्ग के लिए दण्ड व्यवस्था अधिक कठोर होगी।

कर व्यवस्था बोझिल नहीं होगी। इस समुल्लास में बहुत कुछ है जो एक लेख की सीमा में समा नहीं सकता।

'राजधर्म' शब्द ने स्मरण दिला दिया प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटलबिहारी वाजपेयी जी ने गोधरा काण्ड के सर्वघोषित उत्तरदायी मोदी जी को 'राजधर्म' निभाने का परामर्श (आदेश) दिया था। चारों तरफ से घिरे हुए मुख्यमंत्री मोदी जी ने बड़ी सधी, सीधी भाषा में उत्तर दिया था कि वही तो निभा रहा हूँ। अटलजी प्रख्यात भाषण वीर रहे हैं। उन्होंने राजधर्म जिस तरह निभाया वह मोदी ही की सोच से बिलकुल मेल नहीं खाता। मोदी जी कर्मयोगी, कर्मवीर है।

लेख को समापन की ओर ले जाने से पूर्व अत्यन्त संक्षेप में विगत विवरण का उल्लेख करना होगा जिससे सत्यार्थ–प्रकाश से सम्बन्धित अपने मन्तव्य की पुष्टि कर सकूँ।

एक वेदोक्त ईश्वर की अवधारणा जो विगत छः हजार वर्षों से भी अधिक समय से पूरे विश्व में थी ही नहीं, उसकी वेद आधारित प्रमाणों से पुष्टि कर स्थापना करना, आर्य जाति और आर्य संस्कृति का निर्माण, गर्भाधान संस्कार से लेकर अंत्येष्टि संस्कार तक उत्तम आर्य सन्तानों का निर्माण, वणाश्रम व्यवस्था, अनिवार्य शिक्षा–वेद–शास्त्रों के अतिरिक्त साइंस व टैक्नॉलॉजी के अध्ययन की व्यवस्था, शिक्षा का माध्यम मातृभाषा और संस्कृत, स्वतंत्रता संग्राम का सूत्रपात और उसके लिए भगीरथ प्रयत्न। इस कार्य की पूर्ति के लिए जन–जागरण व जन–भागीदारी का सार्थक अभियान, नमक व जंगल कानून का प्रबल विरोध–जिससे आदिवासियों की अर्थव्यवस्था जुड़ी थी, गौहत्या का प्रबलतम विरोध–क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था कृषि से जुड़ी थी और सदियों से गोवंश मातृवत पूजनीय रहा है।

ब्रिटिश शासन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की प्रशंसा करने वाले महर्षि दयानन्द ने शांतिमय संघर्ष की बहुत मजबूत आधारशिला रखी। कभी भड़काऊ भाषण नहीं दिए। जन–जागरण ही उनका प्रबलतम शस्त्र सिद्ध होने वाला था। इसी परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत रख कर मैं कहना चाहूँगा कि 'सत्यार्थ प्रकाश' केवल धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं है, वह एक ऐतिहासक शोध परक, ज्ञान विज्ञान से भरपूर दस्तावेज (Treatise) है, जिस पर भारत राष्ट्र का निर्माण महर्षि दयानन्द को अभिप्रेत था। एक जमाना था जब कार्लमार्क्स के ग्रन्थ 'डास केपिटल' की तुलना में सत्यार्थ प्रकाश को–रखने में बड़ा गर्व अनुभव किया जाता था। जमाना नेहरु और कम्युनिस्टों का था। शोषक व शोषित के वर्गभेद पर आधारित कम्युनिस्ट विचार धारा का ही अन्त हो गया। प्रबलतम पोषक लैनिन व स्टालिन के स्टेच्यु ही हटा दिए गए। महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश वेद आधारित विचारधारा का वाहक है। वेद कालातीत है; वह लुप्त हो सकता है, नष्ट नहीं हो सकता।

थोड़ा इतिहास देखना समीचीन होगा, जिससे ज्ञात हो सके कि अष्टांग योग में समाधि अवस्था तक पहुँचा हुआ योगी वेदों का निष्णात ज्ञाता आदित्य ब्रहमचारी मात्र 18 वर्ष की अल्पअवधि में, विष दग्ध काया से उपरोक्त सम्पूर्ण कार्य को उस मुहाने तक पहुँचा दे, जहाँ से राष्ट्र की स्वतंत्रता और निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सके।

40 वर्ष की आयु (जन्म 1825) में महर्षि दयानन्द 1865 में सक्रिय रूप से कर्मक्षेत्र में उतर गए। 12 मार्च 1867 को कुम्भ मेले में 'पाखण्ड खण्डनी' पताका गाड़ दी। 16 नवम्बर 1869 के काशी शास्त्रार्थ ने देश व्यापी ख्याति प्रदान की। वेदोक्त ईश्वर का ज्ञाता, पूर्णरूपेण उसका समर्थक और मूर्तिपूजा का प्रबलतम विरोधी स्थापित कर दिया। 1865 से 1868 तक ग्यारह शास्त्रार्थ मूर्तिपूजा के खण्डन में थे। ध्यातव्य है कि दो अक्टूबर 1869, 16 नवम्बर 1869 के काशी शास्त्रार्थ से डेढ़ माह पूर्व, मोहनदास करमचन्द गान्धी का जन्म हुआ था। महर्षि दयानन्द प्रसिद्धि के उच्चतम सोपान की ओर अग्रसर थे जब तथा कथित महात्मा (यदि पौत्री की आयु की रिश्तेदार नवयौवना के साथ नग्न सोने वाले व्यक्ति को महात्मा उपाधि से विभूषित किया जा सकता है, तो वह महात्मा थे) गाँधी पैदा ही हुए थे डॉ. भवानीलाल भारतीय की पुस्तक 'मैंने ऋषि दयानन्द को देखा' में इमदाद हुसैन का प्रकरण है। महर्षि ने मिर्जापुर (उ.प्र.) में इमदाद हुसैन को बताया था कि उन्हें काशी शास्त्रार्थ 1869 बाद से 1973 तक तीन बार विष दिया जा चुका था उनकी काया तीव्र गति से नष्ट हो रही थी। रक्त में मिल जाने पर, यौगिक क्रियाओं से भी विष को नहीं निकाला जा सकता।

1875 में सत्यार्थ प्रकाश की रचना हुई और 1875 में ही काकड़वाडी, मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना स्वयं महर्षि के कर–कमलों से हुई। आसन्न मृत्यु की आहटसुन–समझ कर मेरठ में 1880 में वसीयतनामा लिख कर रजिस्टर्ड करवा दिया था। 1882 में महर्षि द्वारा संशोधित सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ। 30 अक्टूबर 1883 को यह विश्व–वंद्य, विश्वरत्न, अजमेर की भिनाय कोठी में कार्तिक अमावस्या–दीपावली की संध्या के छह बजे परमपिता परमात्मा की गोद में, चिर–निद्रा में सो गया।

लेकिन सुषुप्ति की एक हजार वर्ष से अधिक गहरी नींद से भारत की आत्मा को जगा गया। समस्त उत्तर भारत में, अफगानिस्तान की सीमा तक पूर्व में बंगाल और पश्चिम में मुम्बई और गुजरात तक आर्य समाज का मजबूत संगठन खड़ा कर दिया जो देशोत्थान के लिए पूर्णतया दृढ़ संकल्पित था। इस धधकती हुई आग को महर्षि के देहावसान के बाद भी पं. लेखराम भौतिकी विज्ञान के प्रोफेसर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, शहीदे आज़म भगतसिंह के पूर्वज आदि अन्य अनेक नामी गिरामी महामानवों ने प्रदीप्त कर रखा।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, (जिसमें महर्षि असंदिग्ध रुप में मूकदर्शक बन कर खड़े नहीं रहे होगें।) के 28 वर्ष पश्चात् व महर्षि के देहावसान (1883) के 2 वर्ष बाद सन् 1885 में कलक्टर ए.ओ ह्यूम ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भड़की हुई आग का आकलन कर कांग्रेस पार्टी की स्थापना की। उद्देश्य यही होगा कि प्रबुद्ध, अंग्रेजी पढ़े–लिखे, शांति प्रिय भारतीयों का ऐसा संगठन खड़ा किया जाए जो स्वतंत्रता प्राप्ति के तीव्र संघर्ष को dilute कर, ब्रिटिश सत्ता के अन्तर्गत थोड़ी बहुत स्वायत्तता को लेकर संतुष्ट हो जाएँ। ब्रिटिश सत्ता यथावत् रूप से बनी रहे। कांग्रेस पार्टी ऐसा ही संगठन बनी और बनी रही।

सन् 1912 में बैरिस्टर मोहनदास कर्मचन्द गाँधी का भारतीय राजनीति में प्रवेश हुआ। 1865 से गणना की जाए तो 1912 तक लगभग 50 वर्ष

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

श्रीकृष्ण भक्ति रहस्य

● महात्मा चैतन्यमुनि

संसार के इतिहास में अनेकों महापुरूष हुए हैं मगर योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसा बहुआयामी व्यक्तित्व कहीं भी दिखाई नहीं देता है। यही कारण है कि श्रीकृष्ण जी न केवल भारतवर्ष में बल्कि समूचे विश्व में पूजनीय व आदरणीय हैं। वे आप्त पुरूष थे, जनक्रान्ति के अग्रदूत थे, परमात्मा के अनन्य भक्त तथा महान् योगी थे, निर्भीक थे, त्यागी और तपस्वी थे, उनका व्यक्तित्व शालीनता से परिपूर्ण था, मैत्री भाव उनमें कूट–कूट कर भरा हुआ था, वे अद्‌भुत् नीतिवान, सदाचारी, निर्लोभी, नैतिकता से ओत–प्रोत तथा बलवान–योद्धा एवं युगपुरूष थे। महाभारत युद्ध को रोकने का उन्होंने भरसक प्रयास किया मगर दुर्योधन की कुटिलता व हठधर्मिता के कारण वे उसमें सफल नहीं हो सके। जब युद्ध अनिवार्य हो गया तो धर्म की विजय तथा अधर्मियों का नाश करने के लिए वे कटिबद्ध हो गए। युद्ध की पूरी तैयारियाँ हो गई तथा जब दोनों सेनाएँ कुरूक्षेत्र के मैदान में आमने–सामने खड़ी हो गई तो उनके सामने एक बहुत ही विकट स्थिति आ उपस्थित हुई। पाण्डव पक्ष का अतुलनीय वीर अर्जुन मोहग्रस्त होकर युद्ध से ही उपराम हो गया। अर्जुन श्रीकृष्ण जी को तर्क देता है कि वह इन अपनों की हत्या नहीं करेगा, उसे भीख माँगकर निर्वाह करना स्वीकार्य है, यदि उस शस्त्ररहित को कौरव पक्ष वाले मार भी दें तो भी वह प्रतिकार नहीं करेगा, हे केशव! युद्ध के लिए तत्पर इन अपने ही बन्धु–बान्धवों को देखकर मेरा मुँह सूख रहा है, मै पसीना–पसीना हो रहा हूँ, मेरे हाथ से गाण्डीव छूट रहा है..... ऐसा कहकर अर्जुन अपने गाण्डीव को एक ओर रख कर रथ के पिछले भाग में जाकर बैठ जाता है। अर्जुन उस युद्ध की एक बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण कड़ी था, उसकी ऐसी अवस्था देखकर महाभारत युद्ध के सूत्रधार श्रीकृष्ण महाराज जी की अपनी स्थिति कैसी रही होगी इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है। ऐसी विकट परिस्थिति में भी योगीराज विचलित नहीं हुए तथा अर्जुन को गीता के रूप में ऐसा अद्‌भुत् उपदेश दिया कि अर्जुन मोहरहित होकर युद्ध के लिए कटिबद्ध हो गया। गीता का यह ज्ञान आज भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विमोहित व्यक्ति की संजीवनी बनकर अपना कार्य कर रहा है। गीता का निष्काम कर्म वास्तव में ही एक अद्‌भुत तकनीक है, जिसके कार्यन्वयन से व्यक्ति अपने इहलोक तथा परलोक को सहजता से सँवार सकता है।

ऐसे महान् पराक्रमी, ईश्वर–भक्त तथा आत्मवेत्ता के बारे में जब कुछ लोग अनेक प्रकार के आक्षेप लगाते हैं तो अत्यधिक दुःख एवं आश्चर्य होता है। क्या इस प्रकार के नीतिवान, बलवान योगी तथा सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व को माखनचोर, गोपियों के साथ रंगरिलियाँ करने वाला, उन्हें नग्न देखने के लिए उनके वस्त्र चुराने वाला, राधा तथा कुब्जा आदि अन्य अनेक महिलाओं का चरित्र हनन करने वाला, कामी तथा शठी आदि कहना युक्तियुक्त हैं? यदि श्रीकृष्ण जी वास्तव में ही ऐसे थे तो फिर उनका कीर्तन करके हम अपनी सन्तान को क्या शिक्षा देना चाहते है? क्या इस प्रकार से अपने महापुरूषों को अपमानित करना श्रेयष्कर है? वास्तव में श्रीकृष्ण जी का जीवन जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त बहुत उज्ज्वल व अनुकरणीय रहा है। इस प्रकार की किंबदन्तियों और मिथ्यारोपों के कारण कुछ लोगों के लिए उनका व्यक्तित्व विवादास्पद बन गया है मगर हम पुराणों की कल्पनाओं को एक ओर रख कर यदि महाभारत तथा उसी के एक भाग गीता के श्री कृष्ण पर दृष्टि डालें तो वे न केवल शारीरिक बल में ही बल्कि आध्यात्मिकता में भी अतुलनीय दिखाई देते हैं। आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी के रूप को मानता है तथा उन्हें इसी रूप में मानना भी चाहिए क्योंकि वास्तविकता यही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी उनके बारे में अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास में लिखते है–'देखो श्रीकृष्णचन्द्र का इतिहास महाभारत में अत्यत्तुम है। उनका गुण,कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त कुछ बुरा काम किया हो ऐसा नहीं लिखा।' महर्षि दयानन्द जी को ये शब्द इसलिए लिखने पड़े क्योंकि श्रीकृष्ण जी के बारे में विधर्मियों ने ही नहीं बल्कि उनके अनुयायिओं ने भी इस प्रकार के मिथ्यारोप लगाए हैं कि शर्म का माथा भी शर्म से झुक जाता है। ऐसे आप्त पुरूष और महान चिन्तक एवं योगीराज को चोर, जार और अनेक प्रकार के कृटिलतायुक्त व्यवहार करने वाला कहना वास्तव में उनका घोर अपमान करना है।

श्रीकृष्ण जी महाराजा यायाति के कुल में पैदा हुए थे। महाराज यायाति जी के पूर्वज राजाओं के कुछ नाम इस प्रकार मिलते है–अग्नि का पुत्र चन्द, चन्द का पुत्र बुध, बुध का पुत्र इला, इला का पुत्र पुरूनवा, पुरूनवा का पुत्र आयु, आयु का पुत्र नहुष और नहुष के पुत्र का नाम ही यायाति था। महाराजा ययाति की दो रानियाँ थीं– शर्मिष्ठा और देवयानी। शर्मिष्ठा से द्रुह्म, अनु और पुरू नाम के तीन पुत्र तथा देवयानी के यदु और तुर्वथु नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। देवयानी के पुत्र यदु के कुल में ही आगे चलकर श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ इसलिए वे यदुवंशी थे। इनके पिता जी का नाम वसुदेव तथा माता का नाम देवकी था। उन दिनों अत्याचारी कंस का राज्य था, जिसने श्रीकृष्ण जी को पैदा होते ही मरवाने का षडयन्त्र रच रखा था क्योंकि उसके मन में इस बात का भय गहराई से बैठ गया था कि देवकी के आठवें गर्भ से जो सन्तान पैदा होगी वह कंस का नाश करेगी। इसलिए देवकी के गर्भ ठहरने का ज्यों ही उसे पता चलता था वह उस पर पूरी निगरानी रखता था तथा देवकी की सन्तान को पैदा होते ही मरवा दिया करता था। श्रीकृष्ण जी जब देवकी के गर्भ में थे तो उस समय भी कंस ने वसुदेव व देवकी को कारगार में डाल रखा था मगर पैदा होते ही नवजात शिशु श्रीकृष्ण जी को कंस की आंखों में धूल झोंककर जैसे–तैसे मथुरा से नन्द गोप के यहाँ गोकुल पहुँचा दिया गया तथा वहीं पर ही उनका पालन पोषण हुआ।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने आर्यसमाज के नियमों में शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का उल्लेख किया है। श्रीकृष्ण जी के समग्र जीवन पर दृष्टि डालने से यह बात स्पष्ट होती है कि उनका जीवन इन तीनों ही कसौटियों पर एकदम खरा उतरता है। वे शारीरिक रूप से इतने बलवान थे कि उस समय उनके मुकाबले का और कोई ऐसा योद्धा हमें दिखाई नहीं देता है जो योद्धा के रूप में उन जैसा सर्वगुण सम्पन्न हो। उनमें जितना शारीरिक बल था उससे भी कहीं अधिक उनकी आत्मा सबल और सशक्त थी। इस शारीरिक और आत्मिक बल का प्रयोग उन्होंने सामाजिक एकता और समरसता के लिए ही किया। स्वयं उन्हीं के द्वारा की गई घोषणा के अनुसार अधर्म का नाश करना और धर्म की स्थापना करना ही उनके जीवन का लक्ष्य रहा। उन्हें गोकुल में सकुशल पँहुचा तो दिया गया था मगर कंस ने वहाँ पर भी उन्हें समाप्त कराने के प्रयास किए यह अलग बात है कि उसे इसमें सफलता नहीं मिली। युवावस्था तक पँहुचते–पँहुचते श्रीकृष्ण जी ने न केवल पूतना, वत्सासुर , बकासुर और अघासुर आदि का काम तमाम किया बल्कि जब वृन्दावन वासियों पर अतिवृष्टि का प्रकोप आया तो अपने साथियों के सहयोग से उन्होंने सात दिनों तक सबके ठहरने तथा भोजनादि की व्यवस्था गोवर्धन पर्वत पर करके अपनी कार्यकुशलता का परिचय दिया।

श्रीकृष्ण तथा बलराम जी ने सान्दीपनी मुनिजी के गुरूकुल में शिक्षा ग्रहण की थी। इधर कंस को निरन्तर श्रीकृष्ण जी द्वारा किए गए साहसिक कार्यो की सूचना मिलती रहती थी तथा वह उनके इन कार्यो से और अधिक भयभीत होता रहता था। अन्ततः उसने उन्हें समाप्त करने के लिए एक योजना के तहत धनुष–यज्ञ का आयोजन किया और उसमें श्रीकृष्ण व बलराम को भी आमन्त्रित किया। जब वे दोनों भाई वहाँ पँहुचे तो कंस ने उन्हें समाप्त करने के लिए महाबलशाली कुलवयापीड नामक हाथी को छोड़ा। श्रीकृष्ण जी ने देखते–देखते ही उसको मार गिराया तथा धनुष तोड़कर अपनी शक्ति का परिचय दिया। अब तो कंस बहुत अधिक घबरा गया तथा उसने चाणुर और मुष्टिक नाम के दो पहलवानों को उन्हें मारने के लिए छोड़ा। देखते ही देखते श्रीकृष्ण जी ने चाणूर का तथा बलराम जी ने मुष्टिक का काम तमाम कर दिया। उनको समाप्त करके श्रीकृष्ण जी ने कंस को जा पकड़ा तथा बलराम जी ने उनके भाई सुनामा को पकड़ लिया और द्वन्द्वयुद्ध में उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी। कंस का ससुर जरासन्ध उन दिनों बहुत दुराचारी राजा था तथा उसने 86 राजाओं को अपनी कैद में बन्द कर रखा था। कंस की मृत्यु का समाचार सुनकर उसने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। एक नीति के तहत श्रीकृष्ण जी ने मथुरा छोड़ दी तथा द्वारिका चले गए मगर जरासन्ध को समाप्त करने का अवसर उन्हें उस समय मिला जब महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का आयोजन किया। उस समय भीमसेन ने द्वन्द्वयुद्ध में जरासन्ध को मार गिराया। द्वारिका निवास के समय बलराम जी का विवाह रैवतक राजा की पुत्री रेवती के साथ तथा श्रीकृष्ण जी का विवाह रूक्मणी के साथ सम्पन्न हुआ था।

श्रीकृष्ण जी को महाभारत के भयंकर युद्ध से महा–विनाश की संभावना थी इसलिए उन्होंने इस भयंकर युद्ध को रूकवाने के लिए भरसक प्रयास किए। दुर्योधन को यहाँ तक कहा कि वह पाण्डवों को केवल पाँच गाँव ही दे दे मगर वह दुराग्राही नहीं माना। उन्होंने एक और बहुत ही सार्थक प्रयास किया। कर्ण के पास जाकर उन्होंने उसे मनाने का प्रयास किया। उन्होंने उससे कहा कि दुर्योधन तुम्हारे ही

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

☞ पृष्ठ 07 का शेष

श्रीकृष्ण भक्ति रहस्य...

भरोसे यह युद्ध करना चाहता है यदि तुम युद्ध से मना कर दो तो यह युद्ध रूक सकता है। उन्होंने उसके सामने एक बहुत बड़ा राज भी खोल दिया कि वास्तव में वह कुन्ती का ही पुत्र है इसलिए अपने पाण्डव भाइयों से युद्ध करना उपयुक्त नहीं है। वे यह भी कहते है कि युधिष्ठिर को जब इस बात का पता चलेगा कि तुम कुन्ती के पुत्र अर्थात् उन्हीं के बड़े भाई हो तो वह सहर्ष तुम्हें ही अपना राज्य सौंप देंगे... मगर कर्ण ने श्रीकृष्ण जी की बात नहीं मानी। जब साम दाम तथा दण्ड भेद आदि नीतियों से भी बात नहीं बनीं तो श्रीकृष्ण जी के सामने एक ही रास्ता था– **शठे शाठ्यं समाचरेत्**। जब उन्होंने देख लिया कि युद्ध किसी प्रकार से भी टल नहीं सकता है तो उनके सामने एक ही चारा रह गया था कि इन दुराग्रही अधर्मियों को अब सबक सिखाना ही होगा। एक वीर तथा नीतिवान व्यक्ति का ऐसे समय में यही कर्तव्य भी बनता है।

युद्ध की सफलता का पूरा श्रेय भी श्रीकृष्ण जी को ही जाता है। उन्होंने न केवल अर्जुन का मोह भंग करके उसे युद्ध के लिए तैयार किया बल्कि भीष्म, जयद्रथ, कर्ण, द्रोण तथा दुर्योधन को समाप्त करने में भी उनका ही मुख्य हाथ रहा है। श्रीकृष्ण जी के जीवन का लक्ष्य भले ही राजनैतिक एकता तथा सामाजिक समरसता स्थापित करना रहा हो मगर मुख्य रूप से वे आध्यात्मिक महापुरूष थे। ईश्वरोपासना उनके जीवन का अभिन्न अंग था। वैशम्पायन जी एक स्थान पर जनमेजय जी से कहते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण आधा पहर रात बीतने पर शैया त्याग कर उठ बैठते थे और ध्यान के बाद दैनिक कर्म शौचादि से निवृत होकर स्नान करते थे और फिर जपने योग्य गायत्री मन्त्र का जप करके अग्निहोत्र किया करते थे। तत्पश्चात् चारों वेदों के विद्वानों को बुलाकर उनसे वेद मन्त्रों का पाठ एवं उपदेश करवाकर उन्हें गोदान किया करते थे। वे इतने अधिक आध्यात्मिक तथा प्रभु भक्त थे कि यात्रा के समय में भी वे सन्ध्योपासना आदि करना नहीं भूलते थे। इसके उनके जीवन में कितने ही उदाहरण मिलते हैं। एक बार जब वे हस्तिनापुर जा रहे थे तो उन्होंने ऋषियों के आश्रम में विश्राम किया। अगले दिन प्रातःकाल भी उन्होंने सन्ध्यावन्दन तथा अग्निहोत्र किया था।

इसे आर्यवर्त का दुर्भाग्य ही कहना होगा कि ऐसे पुण्यात्मा, योगी, तपस्वी, प्रभु उपासक, वेदज्ञ, धर्मज्ञ, नीतिज्ञ, निरहंकारी एवं लोक हितकारी और अत्यधिक विलक्षण तथा अद्वितीय महापुरूष को कुछ अज्ञानी लोगों ने माखन चोर, व्यभिचारी, शठ तथा वंचक और गोपियों के वस्त्र उठाने वाला बना दिया है। भागवतादि पुराणों में श्रीकृष्ण जी का चरित्र इस तरह का वर्णन किया गया है जो किसी पतित से पतित व्यक्ति का भी नहीं हो सकता है। 'गोपाल सहस्त्रनाम' में यहाँ तक कहा गया है– गोपालः कामिनिजारश्चौर जार शिखामणि। अर्थात् वे परस्त्रीगामी, चोर तथा व्यभिचारियों में शिरोमणि है। महर्षि दयानन्द जी ने उन्हें बड़ी श्रद्धा के साथ आप्त पुरुष कहा है और श्री कृष्ण की निन्दा करने वालों को वे दुःखी हृदय से कहते है– 'जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती?' श्रीकृष्ण जी महाराज एक पत्नी व्रती थे इसलिए उनके ऊपर राधा, कुब्जा आदि अनेक महिलाओं के साथ रासलीलाएँ करने की कल्पनाएँ करना, मात्र उन्हें बदनाम करने के लिए ही की गई लगती है। बहुत आश्चर्य की बात है कि राधा को बड़े ही गौरव के साथ उनकी प्रेयसी घोषित किया जाता है तथा मन्दिरों में भी उनकी पत्नी रूक्मणी का चित्र नहीं बल्कि राधा का चित्र सर्वत्र देखा गया है। इस प्रकार से इनके तथाकथित भक्त क्या बताना चाहते थे तथा आने वाली पीढ़ी को क्या सन्देश देना चाहते है? वास्तविकता यह है कि श्रीकृष्ण के साथ राधा का उल्लेख न तो महाभारत में है और न ही भागवतादि पुराणों में ही है। राधा का उल्लेख केवल ब्रम्हवैवर्त्त पुराण (प्रकृति खण्ड 2प्49) में मिलता है। इस पुराण में राधा और कृष्ण को लेकर अत्यधिक अश्लील चित्रण किया गया है मगर यहाँ पर राधा को वृषभानु नामक वैश्य की कन्या बताया गया है जिसका विवाह रायाण नामक वैश्य के साथ हुआ था। यह रायाण श्रीकृष्ण की माता यशोदा का भाई था अर्थात् श्रीकृष्ण जी का मामा। पुराण कर्त्ता ने राधा के साथ श्रीकृष्ण जी का नाम किस आशय से जोड़ दिया यह समझ से परे की बात है। यही नहीं उनके ऊपर सत्यभामा आदि आठ पत्नियाँ तथा सोलह हजार रानियाँ होने के मिथ्यारोप भी लगाए जाते हैं जो एकदम काल्पनिक हैं।

वास्तव में श्रीकृष्ण जी महाराज एक विलक्षण योद्धा, नीतिवान, धर्मात्मा, योगी, सदाचारी, परोपकारी, निर्भीक, निर्लोभी, शालीन और विनम्र तथा मर्यादा पुरूषोत्तम थे। इसीलिए उनके समकालीन महापुरूषों भीष्म पितामह, विदुर, महर्षि व्यास आदि ने तो उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की ही है मगर धृतराष्ट्र तथा दुर्योधन भी उनकी प्रशंसा करने वालों में ही थे। बहुत से लोगों को यह भ्रम है कि आर्य समाज मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी तथा योगीराज श्रीकृष्ण जी आदि को नहीं मानता है मगर यह उन लोगों की बहुत बड़ी भूल है वास्तव में इन महापुरूषों को केवल और केवल आर्यसमाज ही सही अर्थो में मानता है। महर्षि दयानन्द जी धर्म को व्यवहार के साथ जोड़ने पर बल देते हैं। उनके अनुसार यह पर्याप्त नहीं कि हम इन महापुरूषों को मानें बल्कि हमें उन्हें तो मानना चाहिए मगर उनकी माननी भी चाहिए। हम चित्र की पूजा न करें बल्कि इन महापुरूषों के चरित्र की पूजा करें अर्थात् जैसे उज्ज्वल इनके चरित्र थे, उन्हें वैसा ही मानें–जानें और वैसा ही स्वयं भी बनने का प्रयास करें। यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि हम कितनी बार इनके नाम का जाप करते हैं या इनसे सम्बन्धित ग्रन्थों का पाठ करते हैं बल्कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम इनके गुणों तथा शिक्षाओं को कितना आत्मसात् करते हैं। आज इस बात की नितान्त आवश्यकता है कि राष्ट्र और समाज की स्थिति को सुधारने के लिए हम स्वयं ही कृष्ण और अर्जुन जैसे बनें।

महादेव, सुन्दरनगर
175019 (हि.प्र.)

☞ पृष्ठ 05 का शेष

योगेश्वर कृष्ण का युद्ध ...

कठिन से कठिन परिस्थिति में भी धर्म न छोड़ने से परिचित होकर उसकी प्रशंसा करते हैं। कृष्ण जी के व्यक्तित्व का विराट रूप भी महाभारत युद्ध सम्पन्न होने के कारण ही प्रकाश में आया और इसी कारण वह आज आर्य हिन्दू जाति के पूज्य व स्तुत्य हैं। सभी मनुष्यों के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब उन्हें निराशा व अवसाद से गुजरना पड़ता है। परिवारों में प्रिय जनों की मृत्यु पर भी मनुष्य दुःख व शोक में डूब जाते हैं। ऐसे समय में भी कृष्ण जी आत्मा बोध विषयक यह उपदेश व गीता का अध्ययन मनुष्यों के दुःख व शोक को दूर करता है। वह निराश व दुःखी व्यक्ति आत्मा की नश्वरता व शुभ कर्मो से मनुष्यों के देव कोटि में जन्म लेने की व्यवस्था को जानकर निर्भय होकर हर स्थिति का सामना करने में सक्षम होते हैं।

महर्षि दयानन्द ने श्री कृष्ण जी को ऋषि व योगियों के समान आप्त पुरुष की संज्ञा दी है। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में वह श्री कृष्ण जी की प्रशंसा में उनके यथार्थ व्यक्तित्व का युक्तियुक्त मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं कि **'देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिस में कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त, बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष (कृष्णजी पर) लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रास–मण्डल व क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी पर लगाए हैं। इस को पढ़–पढ़ा व सुन–सुना कर अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।'** इन पंक्तियों में ऋषि दयानन्द ने, जो महाभारत काल के बाद वेदों के मन्त्रों के सत्य अर्थो का प्रकाश करने वाले सबसे बड़े प्रामाणिक विद्वान, ऋषि व योगी हुए हैं, उन्होंने श्री कृष्ण जी को आप्त पुरुष एवं महात्मा शब्द से सम्मानित किया है। यही कृष्ण जी का सच्चा स्वरूप है। मूर्तिपूजा के एक अन्य प्रसंग में स्वामी दयानन्द जी ने द्वारिका के श्री कृष्ण मन्दिर को अंग्रेजों द्वारा तोप से तोड़ दिए जाने का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 1857 के उस युद्ध में वहाँ बाघेर लोगों ने अंग्रेजों के विरुद्ध वीरतापूर्वक युद्ध किया लेकिन कृष्ण जी की मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्री कृष्ण जी जीवित होते तो अंग्रेजों के धुर्रे उड़ा देते और यह अंग्रेज (देश से) भागते फिरते। अतः मूर्तिपूजा और श्री कृष्ण जी के चरित्र को दूषित करने वाला भागवत पुराण त्याज्य है जिससे श्री कृष्ण जी का अपयश रुके और महाभारत में वर्णित उनकी सत्कीर्ति का प्रचार हो।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

☞ पृष्ठ 03 का शेष

योगेश्वर श्री कृष्ण का....

कलंकित श्रीकृष्ण के स्वरूप को आर्यसमाज नहीं मानता है। आर्य समाज उन्हें योगीराज महापुरुष के रूप में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करता है। वे दिव्य गुणों से युक्त महापुरुष थे, उन्हें अवतारी ईश्वर नहीं मानता है। परमात्मा एक है। अनेक नहीं वह कण–कण में सर्वत्र विद्यमान है। वह व्यक्ति नहीं शक्ति है। वह सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान व सर्वान्तर्यामी है। वह जन्म मृत्यु से परे है। गीता में स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा है–

ईश्वरः सर्वभूतानां हृददेशेऽर्जुन तिष्ठति

वह परमेश्वर सर्व प्राणियों के हृदय में सदा निवास करता है। यदि हम श्रीकृष्ण को महापुरुष के रूप में जाने और मानेंगे तो उनसे जीवन जगत के लिए हम बहुत कुछ सीख, प्रेरणा व शिक्षा ले सकते हैं। वे हमारे रोल मॉडल बन सकते हैं। श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन दर्शन निराश, हताश, उदास, परेशान, अशान्त, किं कर्त्तव्य विमूढ व्यक्ति को सदा हिम्मत, सहारा, आशा और आगे बढ़ने की रोशनी देता है। अधिकांश लोगों को यह भ्रान्ति, अज्ञान और भूल है कि आर्य समाज किसी देवी देवता महापुरुष आदि को नहीं मानता है। सच यह है कि जितनी सच्चाई ईमानदारी श्रद्धा भक्ति से महापुरुषों के सत्यस्वरूप को आर्य समाज मानता जानता और बताता है उतना और कोई नहीं क्योंकि आर्य विचारधारा का आधार बुद्धि तर्क, व प्रमाण हैं। आर्य समाज कहता है चित्र का हम सम्मान करते हैं और चरित्र का अनुकरण करते हैं।

प्रतिवर्ष श्रीकृष्ण के जन्म को जन्माष्टमी के रूप में बड़ी धूम–धाम से कृष्ण लीला, रासलीला झाकियों और तरह–तरह के कार्यक्रमों के रूप में मनाया जाता है। ग्लैमरम रास–रंग, रसीले श्रृंगारिक कार्यक्रम होते हैं। करोड़ों का वजट चकाचौंध में चला जाता है। जो श्रीकृष्ण के योगदान महत्त्व, जीवनदर्शन गीता ज्ञान, शिक्षाओं उपदेशों आदि का चिन्तन–मनन होना चाहिए। वह गौण होकर ओझल हो जाता है। मूल छूट जाता है। ऐसे महत्वपूर्ण एवं प्रेरक अवसरों पर महापुरुषों द्वारा दिए गए, उपदेशों, सन्देशों, विचारों व ग्रन्थों पर चिन्तन–मनन व आचरण की शिक्षा लेनी चाहिए। जो महापुरुषों के जीवन चरित्रों के साथ काल्पनिक, चमत्कारिक और अतिश्योक्ति पूर्ण बातें जोड़ दी गई हैं। जिन्हें लोग सत्य वचन महाराज और सिर नीचा करके स्वीकार कर रहे हैं। उन व्यर्थ की मनगढ़न्त बातों पर परस्पर चर्चा करके भ्रान्तियों और अज्ञान को हटाना चाहिए। तभी महापुरुषों को स्मरण रखने तथा जन्मोत्सव मनाने की सार्थकता उपयोगिता और व्यावहारिकता है। उस महामानव इतिहास पुरुष योगेश्वर श्रीकृष्ण की स्मृति को कोटि–कोटि प्रणाम।

बी.जे. 29 पूर्वी
शालीमार बाग दिल्ली–88

☞ पृष्ठ 06 का शेष

महर्षि, सत्यार्थ प्रकाश...

की अवधि का परिपक्व, कटिबद्ध आर्य समाजियों का विशाल जनसमूह उन्हें बिना प्रयास किए सहज ही में मिल गया। महर्षि दयानन्द के शांतिपूर्ण संघर्ष को सत्याग्रह का नाम दिया। नमक कानून के विरोध में दांडी यात्रा निकाली। भारत व्यापी ख्याति उन्हें मुफ्त में मिल गई। हाथ आए हथियार सत्याग्रह का जमकर प्रयोग किया महर्षि दयानन्द को सम्पूर्ण रूप में भुलाकर प्रचारित किया गया। दे दी हमें आजादी, खड्ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।

कांग्रेस इतिहास के लेखक डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने पुष्टि की है कि गाँधी जी द्वारा संचालित स्वतंत्रता संघर्ष में 85 प्रतिशत से अधिक आन्दोलनकारी आर्यसमाजी थे। इस स्वीकारोक्ति से स्वतः ही स्पष्ट है कि महर्षि की अल्पायु (58 वर्ष 8 माह 19 दिन) में मृत्यु न हुई होती तो स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य उनके जीवन काल में ही पूरा होता और उसका समस्त श्रेय महर्षि दयानन्द को ही मिलता। यह अंकित करना दूर की कौड़ी फैंकना नहीं है क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति की अग्नि 1857 के पूर्व से ही जल चुकी थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत का संविधान सत्यार्थ प्रकाश के प्रावधानों के अनुसार ही बनता। यही स्थिति तब भी होती जब स्वामी श्रद्धानन्द महराज आर्य समाजियों के विशाल संगठन का नेतृत्व सँभालकर एक अलग राजनैतिक दल बनाते तब सुभाष चन्द्र बोस, लाल, बाल, पाल आदि जब ही उन्हें सहयोगी रूप में मिल जाते और स्वतंत्रता भी 1947 से पूर्व ही मिलती। प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश फौज को भारतीय सैनिकों का सहयोग कदापि नहीं मिलता। प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य की कमर टूट चुकी थी बस एक धक्का ही तो देना था।

महर्षि दयानन्द के अनुयायियों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व न लेने के कारण एक स्वर्णिम ऐतिहासिक अवसर उनके हाथ से निकल गया जिसकी क्षतिपूर्ति संभव ही नहीं है।

वर्तमान में हमें देखना होगा कि हम कहाँ हैं? महर्षि के समय देश की जनसंख्या 20 करोड़ तो आज इस्लाम धर्म के अनुयायी ही हैं। देश की जनसंख्या 125 करोड़ से भी अधिक है। 125 करोड़ का 1 प्रतिशत भी वैदिक धर्मी नहीं हैं। इस एक प्रतिशत का कितना प्रतिशत विशुद्ध आर्यसमाजी है, जो महर्षि दयानन्द के मिशन को पूरा करने के लिए कृत–संकल्पित है, अनुमान लगाया जा सकता है। विखण्डन का घुन केन्द्रीय नेतृत्व से लेकर ईकाई स्तर तक लग चुका है, विस्तार स्पष्ट दिखाई दे रहा है और मुझे अंग्रेजी का एक मुहावरा याद आ रहा है–All that gliterrs is not gold. प्रत्येक चमकीला पदार्थ सोना नहीं होता है। विस्तार में मिशनरी भावना से कार्य करने वाले कितने हैं? और बृहत्तर आर्यसमाज में उनकी वैल्यु क्या है?

ईसाई, मुसलमान, सिख व जैन धर्म (मत) के अनुयायी जन्म से ही अपने धर्म की घुट्टी पिए होते हैं। क्या, आपने गुरुद्वारों में अवोध बालक–बालिकाओं को मत्था टेकते हुए नहीं देखा है? क्या आपने टुपल्ली लगाए छोटे–छोटे मुस्लिम बच्चों को जुमे (शुक्रवार) की नमाज में जाते हुए नहीं देखा है? जैन साधुओं के सत्संग में आबालवृद्ध समाज उमड़ पड़ता है। ऐसे संस्कारित व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफलता के उच्चतम शिखर पर हों तब भी धर्म के सम्बंध में तर्क करेंगे ही नहीं और यदि आदमी ने कुछ र्तकसम्मत बातें सुन लीं, समझ लीं पर जीवन में अपनाएँगे कभी भी नहीं। बताइए, कभी आपने देखा हो, मैंने तो पिछले साठ साल में नहीं देखा, कोई ईसाई, मुसलमान, सिख व जैनी या पौराणिक भी, आर्यसमाज में आया हो और कहा हो कि हमारे धर्म में ईश्वर की वह अवधारणा नहीं है जो वेदोक्त ईश्वर में बताई जाती है इसलिए हम अपना धर्म त्याग कर वैदिक धर्म स्वीकार करते हैं।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का जयघोष भी गला फाड़कर कीजिए, विश्व को क्या पड़ी अरे! घरवालों को ही आर्य बना कर दिखा दीजिए। अपवाद की बात मत कीजिए। फिर महर्षि के मिशन का सपना कैसे पूरा होगा? निराश होने से काम नहीं चलने का। आर्यवीर दल, डी.ए.वी. स्कूल व कॉलेज तथा गुरुकुल अभी भी आशा का केन्द्र बने हुए हैं। गुरुकुल शिक्षा में जब तक विज्ञान, तकनीकि शिक्षा का माध्यम, मातृभाषा या संस्कृत न हो, तब तक यह शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से दी जानी चाहिए। अंग्रेजी में पारंगत न होने के कारण हजारों उत्तर भारतवासी मल्टीनेशनल कम्पनियों में जॉब नहीं पा पाते। कॉमर्स विषय की शिक्षा भी अंग्रेजी माध्यम से दी जानी चाहिए। सम्भ्रान्त परिवार के बच्चे तभी गुरुकुलों को मिलेंगे। यौवनावस्था में नहीं तो वृद्धावस्था में ही सही ये ही आर्यजन आर्यसमाजों में रविवारीय सत्संगों में दिखलाई पड़ेंगे अन्यथा लिंक के मजबूत ताले।

पाद टिप्पणी–शिवकर बापूजी तलपदे ने 1895 में वायुयान उड़ान का परीक्षण मुम्बई के चौपाटी तट पर किया था। प्रत्यक्षदर्शियों में बड़ौदा नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड़, जस्टिस महादेव गोविन्द्र रानाडे, लालजी नारायण आदि प्रतिष्ठित सज्जन उपस्थित थे।

श्री तलपदे जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में शिक्षक थे। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ऋग्वेद एवं यजुर्वेद ग्रन्थों का अध्ययन कर प्राचीन भारतीय विमान विद्या पर कार्य करने का निर्णय लिया। इसके लिए उन्होंने संस्कृत भाषा सीख कर वैदिक विमान विद्या पर कार्य किया। श्री तलपदे आर्यसमाज काकड़वाड़ी के सदस्य थे।

श्री तलपदे के विमान उड़ान परीक्षण के आठ वर्ष बाद 17 दिसम्बर 1903 को राइट ब्रदर्स ने उड़ान परीक्षण किया था। लेकिन अंग्रेजों की गुलामी के दिनों में और गुलामी के बाद भी भारत में और विश्वभर में यही पढ़ाया जाता है कि विमान उड़ान परीक्षण विश्व में सबसे पहले राइट ब्रदर्स ने ही किया था। वैदिक धर्मी विद्वानों से पिछले साठ–सत्तर साल में यह बात मैंने नहीं सुनी कि तलपदे जी ने विश्व में सबसे सफल उड़ान परीक्षण किया और उनके प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द थे।

22, नगर निगम, क्वार्टर्स, जीवाजीगंज,
लश्कर, ग्वालियर, मध्य प्रदेश– 474001
मो.– 9516622982

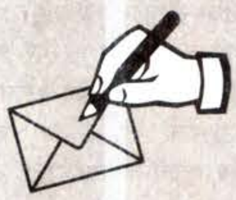

पत्र/कविता

देश की स्वतन्त्रता की खोल के किताब देखो

आ गया स्वराज अभी दूर है सुराज देखो
रोज भारतीयता का जलता मकान है।
सदियों की नींद व गुलामी से छुटे हैं अभी
जाने कैसी प्रातःकाल चढ़ी ये थकान है।
दूसरों की नारियों से सेज को सजाओ नहीं
निजी भाषा के बिना तो देश बेजुबान है।
भाषा को तमाशा न बनाओ देश वासियों रे
हिन्दी के अभाव में अधूरा हिन्दुस्तान है।

आजादी को जाने क्या हुआ है कोई जादू टोना
झोंपडी को छोड़ आज महलों में सोती है।
गांधी की अहिंसा भी हुई है आज विधवा सी
रोज–रोज यहाँ कोई वारदात होती है।
भारत माँ गाय सी कटे है रोज–रोज यहाँ
देश की जवानी डिग्रियों का बोझ ढोती है।
देखले शहीद! तेरी विधवा बहन यहाँ
चाय की दूकान पै ही जूठे कप धोती है।

देश की स्वतन्त्रता की खोल के किताब देखो
पृष्ठ–पृष्ठ रक्त से सना है लाल–लाल है।
'नेताजी' कहीं पै छुपे 'लालाजी' कहीं पै बसे
'बिस्मिल' भगतसिंह उठा हुआ भाल है।
झूठ बोलते हो कवि लाज नहीं लगती है
'साबरमती के संत' का ही ये कमाल है।
ऐसी लेखनी को न सुहागिन कहूँगा कभी
ये तो पूँजीवादियों का कोई भ्रष्ट जाल है।

सारस्वत मोहन मनीषी
मोबाइल नं. 9810835335, 8527835835
कलम नहीं बचेगे से साभार

नव निर्वाचित राष्ट्रपति बधाई

प्रत्येक देशवासी महामहिम नव निर्वाचित राष्ट्रपति माननीय रामनाथ कोविंद जी को बधाई प्रेषित करता है।

प्रत्येक देशवासी को विश्वास है कि राष्ट्रपति भवन में पुनः हिन्दी भाषा को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की जायेगी। हिन्दी को प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने सर्वप्रथम राष्ट्रपति भवन की एक मात्र भाषा घोषित कराया था।

यह भी उल्लेखनीय है कि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने राष्ट्रपति भवन में केवल शाकाहारी भोजन को राष्ट्रपति भवन का भोजन मान्य किया था। मांसाहारी भोजन पूर्णतः वर्जित घोषित किया था। खादी के वस्त्रों को राष्ट्रपति भवन की आधिकरिक पोषाक घोषित किया गया था।

'गाय' डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की सबसे पूजनीय थी। अम्बर चर्खा और यज्ञ को भी राष्ट्रपति भवन में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने प्रवेश दिलाया था।

कृष्ण मोहन गोयल
113 बाजार कोट –अमरोहा

****

क्या आप जानते हो?

1. लम्बे लम्बे नाखून बढ़ाना और उन पर नेल पालिश लगाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
2. स्टोव या गैस की नंगी लौ पर कौई चीज भूनकर या सेककर खाना हानिकारक है। वस्तु में दुर्गन्ध भर जाती है।
3. चाय की पत्ती को बार–बार उबाल कर पीने से दाँत और आँत दोनों खराब हो जाते हैं।
4. धूम्रपान मद्यपान करना अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना है।
6. माँस, मछली, अण्डे, चिकन मनुष्य का भोजन नहीं है। इनके खाने से शरीर में अनेक प्रकार के भयंकर रोग लग जाते हैं। यदि स्वस्थ निरोग रहना चाहाते हो तो शुद्ध शकाहारी बनो।

देवराज आर्यमित्र
WZ–428 हरि नगर, नई दिल्ली 110064

****

दोकलाम : चीन की गीदड़ भभकियाँ

दोकलाम पठार का मामला अब अजीब–सा रुप ग्रहण कर रहा है। चीनी अखबार और सरकार का दावा है कि चीनी फौज तिब्बत में और दोकलाम के पास काफी बड़े पैमाने पर शस्त्रास्त्र जमा कर रही है याने वह युद्ध के लिए पूरी तैयारी में जुटी हुई है और भारत सरकार के प्रवक्ता का कहना है कि सीमांत पर ऐसा कुछ नहीं हो रहा है। हाँ, पिछले महीने तिब्बत में चीनी सेना ने अपना नियमित सैन्य–अभ्यास किया था। उसका दोकलाम–विवाद से कुछ लेना–देना नहीं है। लेकिन चीन के सरकारी टीवी चैनल सीसीटीवी ने दावा किया है कि सिक्किम की सीमा के पास चीनी सेना का जमाव पिछले हफ्ते से ही शुरु हुआ है। पता नहीं, कौन सच बोल रहा है।

भारत सरकार यह क्यों कहेगी कि सीमांत पर चीन का कोई फौजी जमावड़ा नहीं हो रहा है। यदि हो रहा होता तो वह निश्चय ही उसके बारे में इतना शोर मचाती कि उसे सारी दुनिया सुनती। लेकिन चीन शायद इसीलिए शोर मचा रहा है कि भारत डर जाए और डरकर अपने फौजी दोकलाम से हटा ले। कितने दुर्भाग्य का विषय है कि बातचीत से किसी मसले को हल करने की बजाय चीन इस तरह के दांव–पेंच अख्तियार कर रहा है। इस तरह की पैंतरेबाजी कभी–कभी युद्ध का रुप भी धारण कर लेती है।

चीन के कुछ सामरिक विशेषज्ञों ने कहा है कि चीन का यह फौजी जमावड़ा यह सिद्ध करता है कि तिब्बत–जैसी दुर्गम जगह पर भी चीनी फौज कितनी आसानी से पहुँच सकती हैं। याने भारत को यह समझ लेना चाहिए कि उसे चीन के साथ युद्ध छेड़ने की हिमाकत नहीं करना चाहिए। यह भी एक प्रकार की धमकी ही है। गीदड़भभकी ही है। आश्चर्य है कि एशिया के दो अग्रणी राष्ट्र सीधी बातचीत करने की बजाय इस तरह के दलदल में फंस रहे हैं। पिछले लगभग एक माह से दोनों देशों के जवान एक–दूसरे के सामने तने हुए हैं। यदि आज 1962 हुआ होता तो चीन इंतजार नहीं करता। वह चढ़ बैठता लेकिन चीन को भी पता है कि इन गीदड़भभकियों से भारत डरनेवाला नहीं है। उसकी फौजी तैयारी भी पूरी है लेकिन वह युद्ध नहीं चाहता।

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

****

नमस्ते या नमस्कार

अभिवादन के लिए, इन दोनों शब्दों का प्रयोग तो होता है लेकिन अधिकांश को इनका अर्थ या इनके अन्तर की जानकारी प्रायः नहीं है जबकि होनी चाहिए।

नमस्ते का अर्थ है– मैं आपका आदर–सम्मान करता हूँ।

नमस्कार का अर्थ है– मुझे आपका आदर–सम्मान करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने नमस्ते शब्द का ही प्रयोग करने के लिए कहा था।

इन्द्र देव गुलाठी
पूर्व सदस्य आर्य समाज
चौक बाजार, बुलन्दशहर,
मो. 8958778443

****

(पिछले अंक से आगे)

पर्यावरण संरक्षण यज्ञ

● वेद प्रकाश शास्त्री

माधुर्ययुक्त शान्तिदायक पर्यावरण–

ओ३म् मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।

माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः स्वाहा।। यजु. 13/27

हवाएँ माधुर्ययुक्त होकर यथासमय, यथास्थान बहती रहें, हानिकारक होकर नहीं। नदियाँ भी मधुर बनकर अर्थात् निर्मल, स्वच्छ, पवित्र और स्वास्थ्यकर होकर बहें। ओषधियाँ हमारे लिए माधुर्ययुक्त हों।

जब शीतल माधुर्ययुक्त अर्थात् आनन्ददायक हवाएँ बहती हैं, उत्तम जल वाली नदियां प्रवाहित होती हैं और ओषधियां अत्यन्त उत्तम होती हैं तभी सामान्य जीवन सुखदायक, खुशहाल और स्वास्थ्य वर्धक होता है।

ओ३म् मधु नक्तं उतोषसो मधुमत् पार्थिव रजः।

मधु द्यौरस्तु नः पिता स्वाहा।। यजु. 13/28

हमारे लिए रात्रि मधुर अर्थात् आरामदायक और शान्तिकारक हो, निद्रा अच्छी प्रकार आए। उषाकाल भी मधुर हो अर्थात् उषाकाल सभी दोषों को दूर कर दें। यह पार्थिव लोक अर्थात् पृथिवी की मिट्टी भी माधुर्ययुक्त –शक्तिदायक हो। शरीर पर मिट्टी लगने–लगाने पर सब दोष दूर हो जाएँ। पितृ–तुल्य यह घौ लोक हमारे लिए माधुर्ययुक्त हो।

ओ३म् मधुमान् नो वनस्पतिः मधुमान् अस्तु सूर्यः।

माध्वीर्गावो भवन्तु नः स्वाहा।। यजु. 13/29

सारी वनस्पतियाँ हमारे लिए माधुर्य लिए हुए हों। सूर्य माधुर्य युक्त अर्थात् कोमलतापूर्ण ताप, ऊर्जा और प्रकाश वाला हो। गौएँ भी हमारे लिए माधुर्यपूर्ण दूध देने वाली हों।

वस्तुतः सूर्य की किरणों से वनस्पतियाँ भी प्राणशक्ति सम्पन्न होती हैं। उनका सेवन करने वाली गौएँ भी उत्तम दूध देने वाली होती हैं। गोदुग्ध का प्रयोग करके मनुष्य भी बलवान् और बुद्धिमान बनता है।....

क्रमशः

4–E कैलाश नगर
फ़ाज़िल्का

आनन्द धाम, जम्मू में लगेगा योग-ध्यान, साधना शिविर

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य माँ सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनाँक 10 से 17 सितम्बर 2017 तक निःशुल्क योग–ध्यान–साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यो एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाऐंगे। इसके अतिरिक्त योगदर्शन एवं उपनिषद्–पठनपाठन की भी व्यवस्था है।

शिविर में ऋषि उद्यान्, अजमेर से आचार्या सुकामाजी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्दजी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी के ब्रम्हत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण–यज्ञ का आयोजन भी किया जायेगा। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे।

आश्रम में पूज्य स्वामीजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. 09419107788,09419796949 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

अलवर में श्रावणी पर्व पर वृष्टि यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में श्रावणी पर्व एवं वृष्टि यज्ञ का आयोजन प्रातः 7:30 बजे किया गया। अलवर में पर्याप्त वर्षा नहीं होने के कारण वेद मंत्रों द्वारा यज्ञ में विशेष आहुतियाँ दी गई जिससे अलवर में पर्याप्त वर्षा की प्रार्थना की गई। यज्ञ में विशेष सामग्री उपयोग में लाई गई।

साथ ही श्रावणी पर्व मनाया गया जिसमें अमर मुनि जी ने कहा कि चतुर्मास चल रहा है जिसमें वेदों का अध्ययन एवं श्रवण करना चाहिए।

राजपाल जी आर्य (उत्तर प्रदेश) ने योग से शांति प्राप्त करने की विधि बताई।

इस अवसर पर सर्वश्री अमर मुनि, कै. रघुनाथ सिंह, अशोक कुमार आर्य, प्रदीप कुमार आर्य, वेद प्रकाश शर्मा, बृजेन्द देव आर्य, शिव कुमार कौशिक, सत्यपाल आर्य, श्रीमती कमला शर्मा, इन्द्रा आर्य, सुमन आर्य, ईश्वर देवी, लक्ष्मी देवी आर्य, राज गुप्ता, डॉ. एन.एन. गाँधी, चिरंजीलाल–हिसार, राजपाल आर्य–जनपद शायामली (यू.पी.), रामेश्वर प्रसाद आर्य–ग्राम जोडिया, धर्मवीर आर्य, राम सहाय बवेजा एवं भारी संख्या में गणमान्य जन सम्मिलित हुए।

पी.जी.डी.ए.वी. कालेज (सांध्य) दिल्ली में लगेगा अत्याधुनिक परिवेशीय वायु गुणवत्ता अनुश्रवण केंद्र

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण कमेटी (DPCC) एक महत्वकांक्षी और बड़े योजना के अंतर्गत दिल्ली की परिवेशीय वायु गुणवत्ता पर कड़ी निगरानी के लिए पूरे शहर में 20 अत्याधुनिक स्वचालित वायु गुणवत्ता अनुश्रवण केंद्र (Fully Automatic Ambient Air Quality Monitoring Station) स्थापित करने जा रही है. इसी श्रृंखला में दिल्ली विश्वविद्यालय के पी.जी.डी.ए.वी. कालेज (सांध्य) (P-G-D-A-V-College (Evening)) की पहल पर एक अनुश्रवण केंद्र (Monitoring Station) कालेज परिसर में लगना निश्चित हुआ है. लगभग 2 करोड़ की लागत का ऐसा अनुश्रवण केंद्र (Monitoring Station) प्राप्त करने वाला पी.जी.डी.ए.वी. कालेज (सांध्य) विश्वविद्यालय का पहला कॉलेज है.

प्राप्त जानकारी के अनुसार, DPCC ने ऑस्ट्रेलिया की कम्पनी Ecotech से अत्याधुनिक उपकरण खरीदे हैं जिनको पूरे शहर में 20 चिन्हित स्थानों पर लगाया जायेगा. ये उपकरण नवीनतम और स्वचालित होने के कारण अपने आस–पास के वायु–नमूने एकत्रित करके उनका विश्लेषण करेंगे और जनसामान्य को एलईडी स्क्रीन पर वास्तविक काल में आंकड़े (Real Time Data) मिलेंगे. इसी कड़ी में ऐसा ही एक अनुश्रवण केंद्र (Monitoring Station) DPCC की तरफ से पी.जी.डी.ए.वी. कालेज (सांध्य) परिसर में लगाया जा रहा है. कॉलेज के प्रिंसिपल डा. आर.के. गुप्ता ने बताया कि कालेज में ऐसा अनुश्रवण स्टेशन (Monitoring Station) बनवाने का प्रस्ताव कॉलेज की ओर से DPCC के वरिष्ठ अधिकारियों को दिया गया था. DPCC अधिकारियों और कॉलेज प्रिंसिपल के विचार–विमर्श के बाद इस निर्माण कार्य को स्वीकृति मिल गयी. अनुश्रवण केंद्र (Monitoring Station) का निर्माण कार्य कॉलेज में शुरू हो गया है. सितम्बर के दूसरे सप्ताह तक इसको शुरू करने का लक्ष्य DPCC ने रखा है. प्रिंसिपल डा. आर.के. गुप्ता ने बताया की भविष्य में यह केंद्र (स्टेशन) वैज्ञानिकों, शोध छात्रों तथा जागरूक नागरिकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहेगा. अनुश्रवण केंद्र (Monitoring Station) से मिले आंकड़ों की सहायता से आश्रम, महारानीबाग, श्रीनिवासपुरी तथा लाजपतनगर जैसे आसपास के स्थानों की वायु गुणवत्ता का पता चलेगा. पी.जी.डी.ए.वी. कालेज (सांध्य) के अतिरिक्त ऐसे ही अनुश्रवण केंद्र (Monitoring Station) जवाहरलाल नेहरु स्टेडियम, मेजर ध्यानचंद स्टेडियम, करणीसिंह शूटिंग रेंज आदि में लगाए जा रहे हैं.

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 09/10-08-2017

डी.ए.वी. साहिबाबाद में श्रावणी उपाकर्म

वैदिक विभा के आलोक में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, साहिबाबाद में श्रावणी उपाकर्म का भव्य आयोजन किया गया। श्रावणी पर्व के पुण्य अवसर पर प्रधानाचार्य श्री वी.के. चोपड़ा जी द्वारा विश्वशांति महायज्ञ का अनुष्ठान करते हुए यज्ञोपासना द्वारा आत्मिक उन्नति की कामना की गई। इस अवसर पर आत्म शुद्धि, आत्म चिंतन द्वारा मानव मूल्यों के संवर्धन का संकल्प लिया गया। आर्य विद्वानों एवं धर्म शिक्षकों के प्रवचन द्वारा विद्यार्थियों से सेवा, संयम, सदाचार एवं उदात्त चरित्र निर्माण का आग्रह किया गया। इस पावन अवसर पर वसुंधरा की हरिताभा हेतु आर्य युवा समाज द्वारा धरा को हरा–भरा रखने एवं स्वच्छ एवं सौंदर्य युक्त पर्यावरण हेतु जागरूक किया गया।

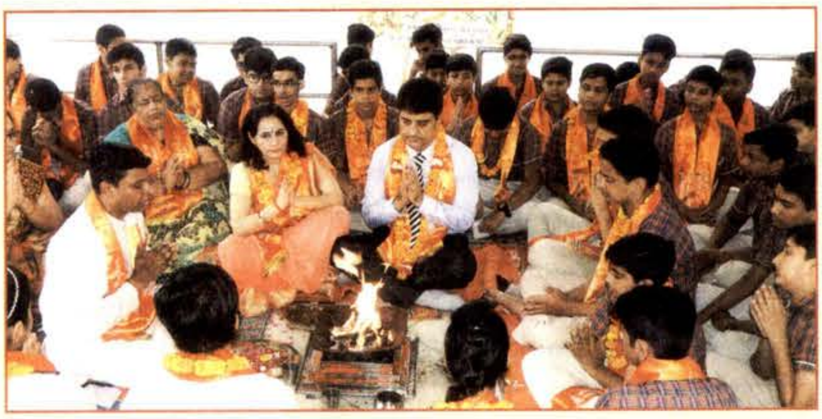

श्रावणी उपाकर्म की विधु–विभुता पर प्रधानाचार्य श्री वी.के. चोपड़ा जी द्वारा विश्वशांति महायज्ञ में समाज कल्याणार्थ एवं विश्व बंधुत्व हेतु विशेष आहुतियाँ समर्पित की गई। इस अवसर पर कक्षा नवीं एवं दसवीं के विद्यार्थियों द्वारा वेदों की ऋचाओं का गायन किया गया तथा महामानव स्वामी दयानंद, स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज एवं महात्मा आनन्द स्वामी जी के जीवन दर्शन की विशद व्याख्या की गई। श्रावण माह में जन्मदिवस का सौभाग्य प्राप्त विद्यार्थियों द्वारा इस पुनीत अवसर पर महायज्ञ में विशेष अनुष्ठान के साथ आहुतियाँ समर्पित की गई तथा प्रधानाचार्य जी ने उन विद्यार्थियों को विशेष रूप से शुभकामनाएँ व आशीर्वाद दिया। यज्ञ प्रार्थना एवं शांति पाठ द्वारा इस भव्य आर्य पर्व का समापन किया गया।

इण्डेन ने डी.ए.वी. के साथ स्वच्छ–भारत की ओर बढ़ाया एक कदम

डी.ए.वी. मल्टीपर्पज़ पब्लिक स्कूल के प्रांगण में इन्डियन–ऑयल–कॉरपोरेशन के संरक्षण गैस–एजेन्सी के वितरकों के साथ सयुक्त रूप से सक्षम 2017 का आयोजन कर विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यालय के बच्चों को जागरूक कर भारत सरकार द्वारा संचालित स्वच्छ–भारत–अभियान को गति दी। डी.ए.वी. स्कूल में दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत पहले दिन विद्यार्थियों के लिए स्वच्छ–भारत विषय पर आधारित चित्रकला, स्लोगन व निबन्ध–लेखन प्रतियोगिताएँ कनिष्ठ

व वरिष्ठ दो वर्गों में सम्पन्न हुई। जिसमें चित्रकला में लगभग 90, स्लोगन में 40 व निबन्ध–लेखन में 60 प्रतिभोगियों ने भाग लिया। अगले दिन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने के साथ कार्यक्रम के मुख्य–अतिथि श्री विशाल उदिया (चीफ एरिया मैनेजर, करनाल एरिया ऑफिस) व गैस्ट ऑफ ऑनर मिस गरिमा खरे ए.एम. (एल.पी.जी.सेल्स पानीपत) एवं को–ऑर्डिनेटर श्री सुभाष वशिष्ट की उपस्थिति में एक कार्यशाला सम्पन्न हुई जिसमें गरिमा खरे ने एल.पी.जी. के प्रयोग के विषय में महत्त्वपूर्ण सावधानियाँ बताईं उन्होंने इस अवसर पर स्वच्छ–भारत का लक्ष्य हासिल करने के उद्देश्य से मंच से विद्यार्थियों को शपथ भी दिलवाई कि वे न तो अपने आस–पास गन्दगी फैलायेंगे और न ही किसी को ऐसा करने देंगे व अपनी दिनचर्चा में से कुछ घण्टे इस कार्य के लिए निश्चित रूप से देंगे।

डी.ए.वी. नेरचौक (हिमाचल प्रदेश) में लगा पाँच दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हिमाचल प्रदेश के तत्वावधान तथा क्षेत्रीय निर्देशक श्री पी.सी. वर्मा जी के निर्देशन में प्रधानाचार्या पूनम गुप्ता द्वारा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल नेरचौक में पाँच दिवसीय आवासीय चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन हुआ। शिविर का शुभारंभ एस.डी.एम. बल्ह डॉ. संजीव धीमान जी ने किया। इस शिविर में डी.ए.वी. हमीरपुर, डी.ए.वी. ग्रयोह, डी.ए.वी. सुन्दरनगर, डी.ए.वी. नेरचौक के लगभग 120 बच्चों तथा 15 अध्यापकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रतिदिन यज्ञ से किया जाता रहा जिसमें स्थानीय लोगों ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया। अंतिम दिवस के यज्ञ में श्री प्रकाश चौधरी जी माननीय राज्य कैबिनेट मन्त्री, श्रीमती कृष्ण चौधरी जी, व्यापार मण्डल प्रधान, श्री अमृत पाल सिंह, श्रीमती अमन प्रीत कौर, नगर परिषद् मेम्बर, आर्य समाज नदौन, हमीरपुर, पट्टा से आए गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

सहारनपुर से आए भजनोपदेशक सुमित्र आर्य तथा गोविंदा व रानी आर्य के भजनों ने सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्रीमती पौमिला ठाकुर लेखिका एवं समाज सेविका ने भी इस शिविर में भाग लेकर इसे एक सराहनीय कदम आंका। शिविर की गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक बुराइयों के प्रति सजगता एवं नकारात्मक भावों जैसे कि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा इत्यादि को त्याग कर प्रेम, सौहार्द, समन्वय, परोपकार, कृतज्ञता इत्यादि सकारात्मक भावों को अपनाने की शिक्षा दी गई तथा छात्रों को सामाजिक बुराइयों के प्रति सजग किया गया। शिविर में छात्रों की सहभागिता अत्यंत सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण रही। शिविर विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण के साथ–साथ उनके शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उत्थान में अहम भूमिका निभाने में सफल हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**